

1

## अपने आपको बदलिए,

अपने आपको बदल लेना, आपके हाथ की बात है। परिस्थितियों को बदलना आपके हाथ की बात नहीं, लोगों को अपनी मरजी का बदलना आपके हाथ की बात नहीं। जो आपके हाथ की बात नहीं है उसके लिए आप प्रयत्न करेंगे तो बेकार हैरान होते रहेंगे। आपके घर वालों को आपका ज्ञान व्यक्ति बनना चाहिए यह मत सोचिए। आप यह देखिए आप उन घर वालों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन कर सकते हैं कि नहीं, बस इतना ही काफी है और आगे बढ़िये मत। परिस्थितियाँ आपके अनुकूल बन जायेंगी, मत सोचिए। परिस्थितियाँ कहाँ बन पाती है, आदमी की स्थिति के अनुरूप।

श्रीकृष्ण भगवान सारे जीवन भर पुरुषार्थ तो करते रहे पर परिस्थितियाँ कहाँ बनी उनके साथ में आप बताइये? गृह कलह हुआ और सारे परिवार के लोग मारे गये अंततः उनको अपना जो राजपाट बड़ी मेहनत से जमाया था सुदामा जी के हवाले करना पड़ा। बताइए आपकी परिस्थितियाँ अनुकूल हो सकती हैं? भगवान की परिस्थितियाँ अनुकूल नहीं हुई तो अगर आप ये सपना देखते हैं कि हमारी मनोकामना पूरी हो जायेंगी और हमारी इच्छानुकूल परिस्थितियाँ बदल जायेगी, ऐसा आप सोचते हैं, तो आपको नहीं विचार करना चाहिए।

यह दुनिया आपके लिए बनी हुई नहीं है। और आपकी इच्छा के लिए पात्रता की और पूर्व संचय-प्रत्यो की जरूरत है वरना वो आप क्यों सोचते हैं कि आपकी इच्छानुकूल हो जायेगी। आप बदल दीजिए। क्या बदल दें? बुढ़े से जवान हो जायें? नहीं, आपके हाथ की बात नहीं। ये शरीर प्रकृति का बनाया हुआ है और प्रकृति उसकी मालिक है। वो जब चाहती है पैदा करती है और जब चाहती है समेट लेती है। आप प्रकृति के मालिक हैं क्या? बुढ़ापे को जवानी में बदल सकते हैं क्या? न, मौत को जिन्दगी में बदल सकते हैं क्या, न। आदमी की सीमा है और जिस सीमा से आप बँधे हुए हैं आप उसी सीमा की बात कीजिए, उसी सीमा का विचार कीजिए तो पूरा होना भी संभव है। असीम बातों को सोचेंगे असंभव बातों की कल्पनाएँ-मान्यताएँ बनाकरके बैठेंगे तो सिवाय हैरानी के आपके पल्ले पड़ने वाला नहीं है। आप हैरानी में न पड़ें, जो उचित है उसीको विचार करें, जो संभव है उसी में हाथ डालें। आपके हाथों में ये संभव है कि अपने मन को बदल दें। अपने ढर्रे को बदल दें, अपने रवैयों को बदल दें, अपने सोचने के तरीके को बदल दें, अपने स्वभाव को बदल दें, यह बदल देना आपके लिए बिलकुल संभव है।

आप यहाँ से जायें तो आप एक ऐसी जिन्दगी लेकर जायें जो सब किसी को बदली हुई मालूम पड़े। आकृति तो नहीं बदली जा सकती आपकी पर प्रकृति बदल

जायेगी। आकृति कैसे बदली सकती है? आकृति नहीं बदली जा सकती है। आपके शरीर की बनावट नहीं बदली जा सकती आपका, आपका स्वभाव बदला जा सकता है।

अब तक तो आपकी जिन्दगी में दो काम शामिल रहे हैं-एक जिन्दगी के लिए काम शामिल रहा है उसका नाम है, उसका नाम है-पेट भरना। दूसरे शब्दों में उसे लोभ कहते हैं। दूसरा काम आपके जिम्मे रहा है- प्रजनन। शादी कर लेना, ढेरों के ढेरों बच्चे पैदा करना, ढेरों के ढेरों बच्चों के बच्चे के वजन को कंधे पे उठाना। उस भारी वजन को उठाने के लिए उचित और अनुचित काम करते रहना। दिन और रात चिंता में डूबे रहना पेट और प्रजनन के लिए यही तो काम रहा है और बताइये, और कौन-सा काम रहा इन दो कामों के अलावा और आपने क्या काम कर दिया। चलिए, तीसरा एक और काम भी किया होगा आपने अपने अहंकार की पूर्ति के लिए, ठाठबाट बनाने के लिए, लोगों की आँखों में चकाचौध पैदा करने के लिए, हो सकता है आपने कुछ ऐसे काम किये हों जिससे आपको बड़प्पन का आभास होता हो। बड़प्पन का आभास होता है, बड़प्पन का आभास है नहीं बड़प्पन। दूसरों की आँखों में चकाचौध पैदा करके आप किस तरीके से बड़े बन पायेंगे। बड़ा बनना तो अपने व्यक्तित्व की कीमत और व्यक्तित्व के मूल्य बढ़ा देने के ऊपर है। आँखों में चमक तो कुछ भी पैदा कर सकते हैं। आँखों में चमक से क्या है? आँखों में चमक तो तश्वीरें, भी पैदा कर लेती हैं, मूर्तियाँ भी पैदा कर लेती हैं। बिमार आदमी को सजाकर बिठा दिया जाय तो वो भी चमक पैदा कर लेता है। चमक पैदा करना भी कुछ काम है क्या? उसमें अपने सिवाय अहंकार की पूर्ति के दूसरा कुछ है ही नहीं। हम बड़े आदमी हैं, बड़े आदमी हैं। अरे, आप क्या बड़े आदमी हैं? मन आपका बड़ा नहीं है, व्यक्तित्व आपका बड़ा नहीं है, संस्कार आपके बड़े नहीं हैं तो बड़प्पन का स्थायित्व कैसे रह जायेगा? सारी जिन्दगी आपकी इन कामों में खतम हो गई है। अब कृपा कीजिए।

अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम शामिल करिये। हम अपने स्वभाव को बदल दें, हम अपने चिंतन को बदल दें, हम अपने आचरण को बदल दें, अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है, जो आपके सोचने का तरीका है उसको आप आसानी से बदल सकते हैं और आपको बदली ही देना चाहिए। अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए उन्नतिशील बनाने के लिए कुछ न कुछ योगदान देना। ऐसा निर्धारण अगर करके आप ले जायें, ऐसा कार्यक्रम यहाँ से बनाकर ले जायें, ऐसी तैयारी में जाते ही आप जुट जायें तो मैं ये कहूँगा कि आपका भविष्य इतना-इतना शानदार होगा कि आप देखकर के स्वयं दंग रह जायेंगे और जो भी आपके संपर्क में आयेंगे वो सब ये कहते रहेंगे कि इस आदमी का कायाकल्प हो गया। आप ऐसा कर पायें तो आपका सार्थक हो जाय ये शिवर।

आज की बात समाप्त ।

2

## देवता बनिए

उस आदमी का नाम देवता है, जो अपनी सुविधाएँ और अपनी सम्पदाओं को मिल बाँटकर खाता है। देवता अकेले नहीं खाते। मिल बाँट के खाते हैं और आपके पास कोई चीज है तो आप मिल बाँट के खाईये। ज्ञान आपके पास है, तो उसका फायदा औरों मिलने दिजिए। आपके पास पैसा है, तो मिल बाँट के खाईये। हरेक को फायदा उठाने दीजिए। अपनी सम्पदा को बाँट के खाईये और दूसरो की मुसीबतों को बटौं लीजिए। देवता यही काम है। देवता देखे है, न आपने। देवता के अंदर यही गुण होता है। देवता को पुकारते हैं। हे भगवान जी हमारी सहायता कीजिए। गणेश जी हमको बुद्धि दीजिए। लक्ष्मी जी हमको पैसा दीजिए। उनका स्वभाव है। क्या स्वभाव है, देते रहते हैं। देते रहते हैं, क्या मतलब। देते रहने का मतलब है अगर उनके पास कोई चीज है तो लोगों को बाँटते रहते हैं और लोगों की मुसीबतों में हिस्सा बँटाते रहते हैं। हम को बुखार आ गया है, हम बिमार है, हे हनुमान जी हमारे बुखार को दूर कर दीजिए। करते हैं की नहीं करते यह बात अलग है पर आपकी मान्यता तो यही है न आपके दुखों में हिस्सा बँटायेगें। आपकी मुसीबत को दूर करेगें। आपकी कठिनाईयो को ठीक कर देगें और उनके पास कोई ज्ञान है, विद्या है वो आपको देगें। देवता इन्हीं दो बजे से देवता है। आपकी मुसीबतों में हिस्सा बँटाते हैं - एक और अगर उनके पास कोई वैभव है तो आसानी से बाँट देते हैं। बस, मिल-बाँट के खाने का मजा देखा है आपने। इक्कड-इक्कड- इक्कड जो अकेला खाता रहता है, वो पाप खाता रहता है। जो अकेले ही संचय करता रहता है, वो आदमी पाप संचय करता रहता है। जो अकेली की खुशी चाहता है, वो आदमी पाप संचय करता रहता है। इसी लिए हमारे यहाँ सहज कुटुम्ब प्रणाली है। सब मिलबाँट कर खायेगें, मिल-जुल रहेगे, हिल-मिल बाँट के सोयेगें। कमाने वाला, कमाने वाला अकेला थोड़ी खाता है, सब मिल बाँट के खा लेते हैं। कोई बच्चा है, कोई बिमार है, कोई बुढ़ा है। बस, ये जो पारिवारिक वृत्ति है इसमें वसुधैव कुटुम्बकम् की मान्यता जुड़ी हुई है। वसुधैव कुटुम्बकम् की मान्यता क्या है- आत्मवत् सर्वभूतेषु आत्मवत् सर्वभूतेषु क्या है। एक ही है, आप दूसरों की मुसीबतों में हिस्सेदार हो जाईये- एक और अपनी सुविधाओं को बाँट दीजिए। हो गया आत्मवत् सर्वभूतेषु और हो गया वसुधैव कुटुम्बकम्। ये सारे सिद्धांतों का निवास इसी तरीके से होता है। इसी लिए आपकी कार्य पद्धति में और आपके चिंतन में यह बातें जुड़ी रहनी चाहिए के हम किस तरीके के मिलबाँट के खायेगें और दूसरों की मुसीबतों में किस तरीके से हाथ बँटाँयेगें। इसी लिए आपको अपना स्व, संकीर्ण, स्व जो आपने कुकमन्डुक की तरीके से सीमित कर रखा है। फिर आप उसको विशाल बना देगें। आप सबके हो जायेगे, सब आपके हो जायेगें। देवता हो जायेगें। आपको स्वर्ग आ जायेगा। अगर आप यह स्वर्ग नहीं खरीद नहीं सकते और आपने सीमा बन्धन, सीमा बन्धन अपना ही खाना, अपना ही पहनना, अपना ही पैसा, अपना ही बेटा, अपना ही देश, अपना ही नाम करते रहेगें तो आप बहुत छोटे रहेगें, जलील आदमी रहेगें और

आपको नरक में रहने वाली जो आत्माएँ भुगतनी पड़ेगी मानसिक दृष्टि से वह सारी आत्माएँ भुगतनी पड़ेगी। शारीरिक दृष्टि से ठीक है यह हो भी सकता है कि आप खाने-पीने का सामान इकट्ठा कर लें, कुछ पैसा इकट्ठा कर लें लेकिन आप दुखी रहेगें, आप दुखी रहेगें। क्या करना चाहिए। आपको, एक और काम करना चाहिए। कौन-सी। खिलाडी की जिन्दगी जीनी चाहिए। खिलाडी की जिन्दगी आप जीये। खिलाडी हारते भी रहते हैं और जीतते भी रहते हैं। जीतते भी रहते हैं। टीम बना के खेलतें रहते हैं। हार गया, ये..... हार गया तो क्या है। चेहरे पर कोई शीकल ही नहीं। आप चेहरे पे शीकल मत आने दीजिए। चिंताओं को और मुसीबतों की कल्पनाएँ करके, संदेह करके और भविष्य की आकांक्षाएँ करके हर समय आपका दिल घुटता रहता है। आप निश्चित रहिए, निद्वन्द रहिए, हँसते रहिए, मुस्कराते रहिए। आप हँसते और मुस्कराते रहेगें, निश्चित रहेगें, तब। खिलाडी की तरह जिन्दगी जीयेगें, तब। तब फिर, आपको मैं देवता कहूँगा। ये नाटक है, आप इसके पात्र है। दुनिया में आपको एक नाटक अदा करना है। आप नटकी तरीके से तमाशा कीजिए। लोगों को मनोरंजन करने दीजिए। लेकिन आप एक निश्चित होकर के राजा जनक की तरीके से अपनी मनस्थिति को बनाये रखिए। फिर, मैं आपको स्वर्ग में निवास करने वाला कहूँगा। भूत का चिंतन मत कीजिए। पिछला जो घटनाएँ हो गईं तो ठीक है। आपने कोई अच्छे काम कर लिए तो बार-बार प्रशंसा करने की जरूरत क्या है, आपके साथ में किसी ने कोई बुराई करली या दुख भुगत लिया तो बार-बार कहने की जरूरत क्या है। भूत तो भूत गया तो गया। आप भूत पर मत विचार कीजिए। भूत से आप अनुभव तो इकट्ठा कर सकते हैं लेकिन चिंता भविष्य की कीजिए। करना हमको क्या है, करना हमको क्या। ये सोचते रहेगें तो फिर मजा आ जायेगा। बूढ़े आदमी भूतकाल का पालन करते रहते हैं। बच्चे भविष्य की बात सोचते रहते हैं लेकिन जवान आदमी वर्तमान की बात सोचते रहते हैं। आपको वर्तमान क्या करना चाहिए। आज का दिन आप किस तरीके से बेहतर बना सकते हैं। अगर ये विचार आपके जी में आ जाय तो फिर मैं आपको यह कहूँगा कि आप स्वर्ग में निवास करने वाले आदमी है। भविष्य की क्यों अनावश्यक कल्पना करें। योजना बना लीजिए। योजना.....। महत्वकांक्षा बात अलग है, योजना बात अलग है। हमको एम ए करना है तो आप स्कीम बनाईये। एम ए नहीं हुये तो मर जायेगें, एम ए नहीं हुये तो नाक कट जायेगी, एम ए नहीं हुये तो बात बिगड़ जायेगी, क्या बात बिगड़ जायेगी। दुनिया में बिना पढ़े भी तो है। आप मैट्रिक पास रह गये तो क्या आफत आ गई। नहीं साहब हमारा ये हो जायेगा, हमारा ये हो जायेगा ऐसे विचार करते रहेगे तो मैं आपको नरक गामी कहूँगा। स्वर्ग में रहने वाले, स्वर्ग में रहने वाले अपने वर्तमान का ध्यान करते हैं, भविष्य की तैयारी करते हैं, भूतकाल को भूल जाते हैं और खिलाडी की तरीके से जिन्दगी जीते हैं। अपने जीवन के तौर तरीको में ऐसा मौलिक परिवर्तन आप करके जाईये, यहाँ से। मेरी जैसी आप यही करें।

आज की बात समाप्त ।

### 3 मनुष्य जीवन की सार्थकता

यह दुनिया बड़ी खराब है। बहुत बड़ी जलील है। अच्छाई भी है, भगवान का रूप भी है। ये तो मैं नहीं कहता कि भगवान का रूप नहीं है। उसमें कमियाँ कम है क्या, बुराईयाँ कम है क्या। एक से एक दुष्ट, एक से एक बेईमान दुनिया मैं भरे पड़े हैं। तो क्या करें सर ! दूसरों के प्रति द्वेष। द्वेष करेंगे तो भी आप जल जायेंगे, ईर्ष्या, ईर्ष्या से भी आप जल जायेंगे, प्रतिशोध, प्रतिशोध से भी आप जल जायेंगे। इससे आप सामने वाले का जितना नुकसान करेंगे, उससे ज्यादा अपना नुकसान कर लेंगे। एक तो दूसरे आदमी ने आपको नुकसान पहुँचाया-नुकसान नम्बर एक। और एक आपने एक नई बिमारीयाँ शुरूआत कर ली। डाह की, ईर्ष्या की, प्रतिशोध की, घृणा की। यह सारी की सारी चीजों को आप बनाये रखेंगे तो आप कैसे जीयेंगे। बताईये न। बहार से भी पीसेंगे और भीतर से भी पीसेंगे तो आप मरेगें नहीं। आप ऐसे मत कीजिए। आप क्या करें। आप बुराईयों को बरदाश्त करे नहीं, यह तो मैं नहीं कहता। बुराईयों को बरदाश्त करें। आप बुराईयों से संघर्ष जरूर कीजिए। फिर संघर्ष करने का दूसरा तरीका है। कौन-सा। वो तरीका है, जो के डॉक्टर अख्तियार करता है, किसके लिए मरीज के लिए, मरीज के रोगों को मार डालने के लिए हरक्षण कोशिश करता है, रोग बचने न पायें, विषाणु बचने न पायें, रक्त की प्रदुषण बचने न पायें। लेकिन रोगी को नुकसान होने न पायें। आप रोगी को नुकसान पहुँचाये बिना उसकी बुराईयों को दूर करने के लिए बराबर जजोहस करते हैं। जब आप किसी व्यक्ति विशेष को हानि पहुँचाने की बात सोचते हैं तो उद्देश्य हो जाता है। और आप उनके दोषों को, दुर्गुणों को, कमियों को हटाने की बात सोचते हैं तब, तब कोई दिक्कत नहीं पड़ती। आप ऐसे कीजिए न।

आपको एक और काम करना चाहिए। आपको आत्मनिर्भर होना चाहिए। अपने ऊपर डिपेन्ड कीजिए। क्या करें। बहार के लोगों आदमीओं से मत उम्मीदें कीजिए, मत विश्वास कीजिए, मत अविश्वास कीजिए। आप यह मानकर चलिए कि उन्नति करेंगे तो हम ही करेंगे। किसी आदमी से आप यह आशा लगायें बैठे हैं वब आदमी आपकी सहायता करेगा। क्यों आपकी सहायता करेगा।

आशा बिरानी जो करें, जीयत ही मर जायें।

यह इतिहास की कथा है। अब ठीक है, वक्त मिल जायेगा तो सहायता मिल भी सकती है, नहीं मिल भी सकती। और जो आप कदम उठायें अपने पैरों पर रख कर उठायें। उम्मीद ये करे ये काम हमको करना है और हम ही करेंगे। अगर आपका यह आत्मविश्वास है तब, तब फिर आपको आत्मनिर्भर व्यक्ति कहा जायेगा। सूरज किसी पर डिपेन्ड नहीं करता कि हमको कोई अन्न चढ़ायेगा कि नहीं चढ़ायेगा। हवा किसी पर डिपेन्ड नहीं करती, किसी की अपेक्षा नहीं करती। चन्द्रमा किसी की अपेक्षा नहीं करता। जमीन किसी की अपेक्षा नहीं करती। अगर आप किसी की अपेक्षा मत कीजिए। इसका अर्थ यह नहीं है कि आप सहयोगी जीवन न जीयें, परस्पर मिलना-झुलना न करें। विधेयात्मक चिंतन, जिससे की आदमी देवता बन जाते हैं। खराब आदमी है उसको हम अच्छा बनायेंगे, सज्जन बनायेंगे यह क्यों नहीं सोचते। खराब आदमी है, कल उसको मार डालेंगे, घटिया कर डालेंगे, यह क्यों सोचते हैं।

यह मत सोचिए। आप दृष्टिकोण को बदलिए न। जो कुछ भी आपके पास मिला हुआ है वह कम नहीं है। बहुत मिला हुआ है। आप देखिए न। जरा दूसरें जानवरों को देखिए न, कीड़े-मकोड़ों को देखिए न, पशु-पक्षीओं को देखिए न। कैसी गिनौनी और कैसी गई-बीती और कैसी छोटी जिन्दगी विकसित करते हैं। फिर, आप, आप क्यों ऐसी जिन्दगी जीयेंगे। भगवान ने तो आपको राजकुमार बनाया है। आपको बुद्धि दी है न, आपको वाणी दी है न, आपको हाथ-पाँव दीये हैं न। आप तो घर में रहते हैं न। आपको जीविका है, पहली तारीख को तन्खाह है मिल जाती है, रोटी खा लेते हैं न। दूसरें जानवरों को देखिए। उन बिचारों को न कोई तन्खाह है, न कोई नौकरी है, न कोई कपडा है, न कोई बोलने का ढंग है। इन सबकी तुलना में आपको कितना मिला हुआ है। आप इन पर खुशी नहीं मना सकते, आप प्रसन्न नहीं हो सकते, आपके चेहरे पर मुस्कराहट नहीं आ सकती के जो हमारी वर्तमान परिस्थितियाँ है उसमें हमको प्रसन्न रहने का हक आप तो हमेंशा अभावों को सोचते रहते हैं। अभावों को। अभावों को सोचने का अर्थ होता है-नरक। अभावों को ध्यान में नहीं रखना चाहिए उसको दूर नहीं करना चाहिए। यह मैं नहीं कहता हूँ। मैं तो यह कहता हूँ। आप हमेंशा आपको अभाव ग्रस्त, अभाव ग्रस्त, अभाव ग्रस्त दरिद्र और कंगाल मानते बैठे रहेंगे तो आप दरिद्र और कंगाल ही रह जायेंगे। आप मत अपने आपको दरिद्र मानिए और मत अपने आपको कंगाल मानिए। अगर आप यह मान के चलिए कि आप देवता है। देवता हुए, तो आप देने में समर्थ है। आपके पास देने को बहुत है। रुपया-पैसा हमारे पास कम है, तो पैसा कौन माँग रहा है और पैसा देकर के आप क्या भला करेंगे आदमी का। आप दूसरों को प्यार दीजिए न, आप दूसरों को सम्मान दीजिए न। देखिए सम्मान का दुनिया कितनी प्यासी है। लोगों को प्रोत्साहन दीजिए न। देखिए आपको प्रोत्साहन देकर के छोटे से छोटे आदमी क्या से क्या बन सकते हैं। देने के लिए कुछ कम है, क्या। आप मेहनत दे दीजिए, आप लोगों के लिए सहानुभूति दे दीजिए। देने के लिए कुछ भी कम नहीं है। आपके पास देने की अगर मनोवृत्ति हो तो आप कुछ भी दे सकते हैं। आप चार रोटी खाते हैं, तीन रोटी खाईये और एक रोटी बचा लीजिए गरीबों के लिए। फिर आप देखेंगे किस तरीके से आपको शांति मिलती है और किस तरीके से आप प्रसन्नता की नजदीक चले आते हैं। भगवान का नाम प्यार है। प्यारा भीतर पैदा कीजिए न। जिस दिन आप प्यार पैदा करेंगे, उस दिन आप के मन से एक ही उमंग और ऐसी हिलोरें उत्पन्न होंगी, कि हमको कैसे दूसरों की सहायता करनी चाहिए। जब दूसरों की सहायता करने के लिए आमादा होंगे तो आपको अपने में से कटौती करनी पड़ेगी, फिर साधु और ब्राह्मण का जीवन जीना पड़ेगा। ब्राह्मण किफायतसार को कहते हैं, मितव्ययी को कहते हैं, अपरिग्रही को कहते हैं, स्वल्प संतोषी को कहते हैं। आप ब्राह्मण बनिए और भूदेव पृथ्वी के देवताओं में अपने नाम को लगा दीजिए। और संत किसे कहते हैं। परोपकारीयों को कहते हैं, लोकहित में लगे हुए आदमीओं को कहते हैं। सत्प्रवृत्तिओं में अपने आपको खपा देने वाले का नाम संत कहते हैं। आप संत और ब्राह्मण के रूप अथवा दोनों के संयुक्त जीवनयापन करने के रूप में अगर आप जीयें तो मजा आ जायेगा। मेरी जैसी आप यही करें।

आज की बात समाप्त ।

## चिंतन का महत्त्व

चिंतन उसे कहते हैं कि जिसमें के भूतकाल के लिए विचार किया जाता है। भूतकाल हमारा किस तरीके से वितरित हुआ इसके बारे में समीक्षा करिये। अपनी समीक्षा नहीं कर पाते आप। दूसरों की समीक्षा करना जानते हैं। पड़ोशी की समीक्षा कर सकते हैं, बीबी के दोष निकाल सकते हैं, बच्चों की नुचकीनी कर सकते हैं सारे दुनिया की गलती बता सकते हैं, भगवान की गलती बता देंगे और हरेक की गलती बता देंगे। कोई ऐसा बचा हुआ नहीं है, जिसको आप गलती बताते न हो। लेकिन अपनी गलती। अपनी गलती पर आप विचार ही नहीं करते। अपनी गलतियों पर हम विचार करना शुरू करें और अपनी चाल की समीक्षा लेना शुरू करें और अपने आपका हम परिवेक्षण शुरू करें तो ढेरों की ढेरों चीजे हम को ऐसी मालूम पड़ेगी जो हम को नहीं करनी चाहिए थी और ढेरों की ढेरों ऐसी चीजे मालूम पड़ेगी आपको जो इस समय हमने जिस कामों को, जिस बातों को अपनाया हुआ है, उनको नहीं अपनाना चाहिए था।

मन की बनावट कुछ ऐसी विलक्षण है, अपना स्वच्छता, अपना स्वच्छता बस अपना स्वच्छता। यही बात बनी रहती है। अपना स्वभाव भी अच्छा, अपना आचरण भी अच्छा, अपना विचार भी अच्छा, अपना चिंतन भी अच्छा सब अपना अच्छा बहारवालों का गलत। आध्यात्मिक उन्नति में इसके बराबर अडचन डालने वाला और दूसरा कोई व्यवधान है ही नहीं। इसीलिए आप पहला काम वहाँ से शुरू कीजिए की आत्म समीक्षा। एकान्त में जब आप चिंतन के लिए बैठे तो आप यह समझे की हम अकेले है और कोई हमारा साथी या सहकाई है ही नहीं। साथी अपने स्थान पर, सहकाई अपने स्थान पर, कुटुम्बी अपने स्थान पर, पैसा अपने स्थान पर, व्यापार अपने स्थान पर, खेतीवाड़ी अपने स्थान पर इन सबको अपने-अपने स्थान पर रहने दीजिए। आप सिर्फ यह विचार किया कीजिए हम पिछले दिनों क्या भूल करते रहे, रास्ता भटकते तो नहीं गये, भूल तो नहीं गये, इस लिए जन्म मिला था, क्या ? जिस काम के लिए जन्म मिला था वो ही करते रहे, क्या ? पेट के लिए जितनी जरूरत थी उससे ज्यादा कमाते रहे, क्या ? कुटुम्ब की जितनी जिम्मेदारियाँ पूरी करनी चाहिए थी उसको पूरा करने स्थान पर अनावश्यक संख्या में लोड बहाते रहे, क्या ? और जिन लोगों को जिस चीज की जरूरत नहीं थी उनको प्रसन्नता के लिए उपहार रूप में लादते रहे, क्या ? क्यों ? बजे क्या ? ये सब गलतियाँ है। ये गलतियाँ है। इसी तरीके से अपने स्वास्थ्य के लिए जो खान-पान, आहार-विहार जैसा रखना चाहिए था वैसे रखा, क्या ? चिंतन की शैली में जिस तरीके की शालीनता का समावेश होना चाहिए था वो रखा गया क्या ? ना। ना, हमने अपने

शरीर के प्रति कर्तव्यों का पालन किया, ना अपने मस्तिष्क के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन किया, ना हमने अपने कुटुम्बियों के प्रति अपने कर्तव्यों का पालन किया। कर्तव्यों की दृष्टि से हम बराबर बिखरे हुए चले गए। जहाँ-जहाँ हम बिखरते हुए चले गये उन सब को एकबार ही विचार कीजिए। क्यों ? विचार करने से क्या फायदा ? ये फायदा है ? गलतियाँ समझ में आयेगी जो सुधार की भी गुंजाईश रहेगी। गलतियाँ समझ में नहीं आयेगी तो आप सुधारेगें क्यों ? इसी लिए समीक्षा जो है, नाड़ी समीक्षा अपने आपकी कीजिए, भूतकाल के सम्बन्ध में।

पाप क्राईम को नहीं कहते। पाप उन्हें भी कहते हैं, जो के जीवन को अस्त-व्यस्त बनाकर रखें, जो भी प्रकार की हत्या वगैरेह ये तो बुरे कर्म है ही है लेकिन ये भी कम बुरा कर्म नहीं है के आप आलस्य-प्रमाद में ही समय काट डालें। आप अपने स्वभाव को गुस्से बाज बनाकर रखें, ईर्ष्या किया करें, चिंतन और मनन को अस्त-व्यस्त बनाकर रखें। ये भी कोई ढंग है। ये क्या है, ये भी गलतियाँ है। व्यक्तिगत जीवन में आपको गुण, कर्म, स्वभाव संबंधी गलतियाँ क्या हुई और क्राईम अपराध, जुल्म करने के संबंध में क्या भूलें हुई, इन दोनों के बारे में एकबार विचार किया कीजिए। ये विचार करना बहुत जरूरी है। इससे, यह मालूम होता है कि हमारी गलतियाँ कहाँ है और हम कितना चूकते रहे और चूकते रहे है। इन चूकों को सुधारने वाला अगला कदम आता है-आत्मपरिष्कार। आत्मनिरीक्षण के बाद में आत्मपरिष्कार का दूसरा नम्बर आता है। सुधार कैसे करे। सुधार में क्या बात करनी होती है। सुधार में रोकथाम करनी पडती है। मशरन में आप शराब पीते है तो आप बन्द कीजिए। नहीं साहब हम शराब नहीं पीयेगें। आप बीडी पीते है, सीगरेट पीते है, अपना कलेजा जलाते है थोडा विचार कीजिए अब हम कलेजा नहीं जलायेगें। आत्मपरिशोधन इसी का नाम है, जो गलतियाँ हुई है उसके विरुद्ध बगावत खड़ी कर दें, रोकथाम के लिए आमामादा हो जायें, संकल्प बल से यह इस्तेमाल करे के जो भूल होती रही है अब हम नहीं करेगें। इसकी स्कीम बनायें। गलतियाँ न होने देने का तरीका क्या है। क्या हम करेगें। अपने आप में जो कच्चाईयाँ आयेगी जब आपको कच्चाईयाँ यह मजबूर करेगी जो करते रहे है वही झगड़ा चलते रहना चाहिए। अपने आप में पक्षपात और रियाज करने का जब आपका मन उठे तब आप उसके मन के निग्रहीत हो जाईये, मन को तोड़ये। मन सुलाईज कीजिए। आत्मपरिष्कार इसी का नाम है। आत्मनिरीक्षण और आत्मपरिष्कार अथवा परिशोधन इन दो कार्यों को मिला देने से चिंतन की प्रक्रिया पूरी हो जाती है। यही कहना था आज आपको।

। ओम शांति।

5

## मनन का महत्त्व

एकान्त सेवन में दूसरा वाला कदम उठाईये। उसका नाम है-मनन। मनन क्या? मनन के भी दो हिस्से हैं। चिंतन के जैसे दो हिस्से थे। ऐसे मनन के भी दो हिस्से हैं। एक हिस्से का नाम है-आत्म निर्माण। एक का नाम है-आत्म विकास। निर्माण में क्या? निर्माण उसे कहते हैं, जो चीजें आपके पास नहीं हैं, चाहे जो स्वभाव, गुण और कर्म में जो बात शामिल नहीं है, उसे शामिल कीजिए। मसलन, आप पढ़े नहीं हैं, विद्या नहीं है, अब, आप कोशिश कीजिए। काहे को!!! कि आपको विद्या पढ़नी है, हम ईमानदारी से रहते हैं, बीड़ी नहीं पीते हैं, वो तो ठीक है, आपकी बात पर यह पूछता हूँ, विद्या की जो कमी है, उसको आप क्यों पूरा नहीं करते। विद्या की कमी को जो पूरा नहीं करेंगे, तो उन्नति कैसे हो जायेगी, आपका ज्ञान का दायरा कैसे बढ़ेगा, आपकी बुद्धि का विकास कैसे होगा। इसीलिए यहाँ आत्म निर्माण के लिए भी ढेरों काम करने हैं। स्वास्थ्य आपका कमजोर है, इसीसे तो काम नहीं चल जायेगा न, कि हम बीड़ी पीते रहें, हम बन्द कर देंगे। बन्द तो करनी चाहिए थी, पर एक और बात भी करनी पड़ेगी। आपको स्वास्थ्य संवर्धन करने के लिए आपके अपने आहार में क्रांतिकारी परिवर्तन करना पड़ेगा। ब्रह्मचर्य धारण करना पड़ेगा। और, और व्यायाम का कोई न कोई तरीके का अख्तियार करना पड़ेगा। ये जो नये तरीके अख्तियार करने हैं, किस के लिए, प्रगति के लिए। यह सब आत्म निर्माण में आते हैं, कमी को पूरा करना। कमी को सुधारना ही तक सीमित नहीं है, कमी को पूरा भी तो कीजिए। सुधार नहीं है, उससे क्या बना। पूरा नहीं करेंगे, विद्या को आप नहीं पढ़ेंगे, स्वास्थ्य को सुधारेगें नहीं, जन सम्पर्क बढ़ायेगें नहीं, सेवा के लिए कदम बढ़ायेगें नहीं। जो काम करने है, नहीं साहब! हमने अपनी गलती सुधार ली। गलती सुधारने से क्या मतलब। गलती को सुधारिये और अपनी योग्यताओं को, अपनी क्षमताओं को और अपनी भावनाओं को विकसित कीजिए। आत्म निर्माण में बराबर यह देखना पड़ेगा कि हमारे जीवन में क्या-क्या कमी है और कमी को पूरा करना। अपने स्वभाव को और अपनी आदतों को हम ठीक बनायें। अपने आपको बनाईये, अपने स्वास्थ्य को बनाईये, अपने व्यक्तित्व को बनाइये, अपने चरित्र को बनाइये, अपने स्वभाव को बनाइये, अपनी कार्यशैली को बनाईये। हर चीज बनाईये। इस बनाने के अलावा एक और भी ध्यान रखिए, आप अपने कुटुम्ब को बनाईये। निर्माण केवल अपने आपका। हम अपने आप में सन्त बन जायेंगे और रामायण पढ़ेंगे और हम मिठाई नहीं खायेंगे। आप तो बन गये फिर क्या करें। वो भी तो आपका अंग है। आप अकेले थोड़ी है, कोई। जो कुटुम्ब है, वो भी आपके साथ जुड़ा हुआ है। इसी लिए निर्माण उसका भी करना पड़ेगा और उसका निर्माण नहीं कर सकते। सारे के सारे घर वाले कमीने, उज्जड, मूर्ख, दुष्ट बनकर रहेंगे तो फिर आपकी शांति कैसे स्थिर रहेगी, फिर आप भजन कैसे कर लेंगे, फिर आप अच्छी जिन्दगी कैसे जी लेंगे, फिर आप मीठे वचन का अभ्यास कैसे कर लेंगे। जब हर आदमी हैरान होगा तो आपको गुस्सा क्यों नहीं आयेगा। इसी लिए क्या करना चाहिए के अपना व्यक्तिगत जीवन सुख और शांतिमय बनाने के लिए अपने कुटुम्ब और परिवार के बारे में ठीक वो ही नीति लिहाज कीजिए, जो अपने बारे में है।

वो भी तो आपके अंग है। इन सबको बनाईये। क्या बनाये उनका। एक ही बात बनाईये।

इसके अंदर भलमनसाहत पैदा कीजिए, चरित्र निष्ठा पैदा कीजिए। आदर्श पैदा कीजिए, सत्प्रवृत्तियाँ पैदा कीजिए। सम्पन्न बन जाते हैं तो, न बन जाते हैं तो कुछ बनता बिगड़ता नहीं है। गरीबी में भी लोगों ने शानदार जिन्दगियाँ जी हैं और अमीर रहते हुए भी आदमी इतने कलह उत्पन्न किया है कि वो खुद मर गया है और दूसरों को मार डाला है। इसीलिए सम्पन्नता की बात नहीं करता, आपसे। निर्माण के लिए मेरा मतलब-गुण, कर्म और स्वभाव से है। आपनी विशेषताओं को, आप आदमी की शालीनताओं को, आदतों को और चिंतन की शैली को बदलने के लिए जो कुछ कर सकते हैं, वो सब कीजिए। परिवार के पंचशीलों में श्रमशीलता का नाम आता है। सुव्यवस्था का नाम आता है। मितव्ययिता का नाम आता है। सहकारिता का नाम आता है। ये सब बातें उसमें आती है। आप गुण सब बातों को स्वयं भी धारण कीजिए और दूसरों को भी बताइये। ये व्यक्तित्व के केवल व्यक्तित्व के निर्माण करने, चिंतन के निर्माण करने का शानदार तरीका है। आप उसको किस तरीके से कार्यान्वित कर सकते है। उसके बारे में चिंतन और मनन के समय पर जब आप बैठें एकान्त में, तब आप विचार किया कीजिए।

एक और धारा है, जिसे मनन का दूसरा स्टेप कह सकते है। उसका नाम है-आत्म विकास। आत्म विकास। आत्म विकास का क्या मतलब है के अपने अहं के दायरे को बढ़ा देना। लोगों का दायरा बहुत छोटा है। कूपमण्डूक की तरीके से। अपने शरीर को ही अपना मानते हैं। ये नहीं मानते कि हम समस्त समाज के घटक मात्र हैं। रक्त के एक कण की क्या कीमत रह सकती है। आप बताइये। रक्त के यदि कणों के समूह जब मिल जाते हैं, तो ही तो खून का संचार होता है। एक कण ऐसा निकल लेने से क्या ईकाई है विचारों की। संयुक्त होने पर ही बात बनती है। इसीलिए आपके दायरे को छोटा मत कीजिए। आप संकीर्ण स्वार्थपरता से ऊँचा उठने की कोशिश कीजिए। अपने "मैं" के स्थान पर "हम" कहना सीखिए। "हम सब" हूँ "हम सब"। अगर आप यही रहेंगे "मैं", "मैं" तो आप बकरे की तरीके से आप सीमाबद्ध हो जायेंगे और कूपमण्डूक की तरीके से एक ऐसे छोटे दायरे में घिरे रहेंगे। जिसमें कि आप और आपका कुटुम्ब। बस इतना ही आदमी रह जायेगा। आपका समाज से और शायद भगवान् से कोई सम्बन्ध रह जायेगा। इसलिए अपने आपका दायरा विकसित कीजिए। "हम सबके", "सब हमारे" इस तरीके से विचार कीजिए। आप इस तरीके से विचार कीजिए- "आत्मवत् सर्वभूतेषु"। यह सारा संसार हमारे ही समान है। सबके सहयोग से हम जिन्दा हैं और हमारा सहयोग सबको मिलना चाहिए। ये अगर विचार करेंगे तो आप समाजनिष्ठ होते चले जायेंगे। देश, धर्म और समाज के प्रति आप अपना लगाव व्यक्त करने लगेंगे और उनकी समस्याओं को अपनी समस्याएँ मानने लगेंगे। ये क्या हो गया-आत्मा का विकास। जो चीजें आपको अपनी मालूम पड़ती है, उसमें प्रसन्नता होती है और उनको आप अपना समझते हैं। लेकिन अगर आप सबको अपना मानने लेंगे तब, आपको कितना गर्व और गौरव अनुभव होगा। सूरज भी आपका, चाँद भी आपके, सितारे भी आपके, नदी भी आपकी, पहाड़ भी आपका, जमीन भी आपकी, सारे इन्सान भी आपके, कुटुम्ब भी आपका। सारा संसार आपका। जिस दिन आप सबको अपना मानने लगेंगे और अपने को सबका मानने लगेंगे तब। तब आप फिर जरा देखना तो सही। कैसा मजा आता है, कैसा आनन्द आता है, जीवन में, गतिविधियों में कैसा हेरफेर होता है और आपकी प्रसन्नता किस तरीके से जमीन से आसमान तक चूम लेती है। ऐसी शक्ति पैदा कीजिए। बस, यही कहना था, आज आपसे।

। ओम शांति ।

6

## उपासना का महत्त्व

व्यक्ति की उन्नति वास्तव में बाहर से नहीं होती। जड़े, पेड़ की जमीन के नीचे होती है। दिखाई नहीं पड़ती। जड़ अगर छोटी है, तो पेड़ बढ़ नहीं सकता। पेड़ बढ़ नहीं सकता। आदमी का जितना विस्तार आपको दिखाई पड़ता है, वास्तव में उसके शरीर का विस्तार नहीं है। वास्तव में उसके पैसे का विस्तार नहीं है। वास्तव में उसकी अकल का विस्तार नहीं है। पर आदमी का विस्तार है, आदमी की अंतःचेतना का विस्तार। अंतःचेतना इतनी छोटे स्तर की हो गई। आदमी घटिया का घटिया ही रह जायेगा। कमीने का कमीना ही रह जायेगा। छोटे का छोटा ही रह जायेगा। कोई और आदमी दूसरी उसकी सहायता भी करना चाहे तो कर नहीं सकेगा, अगर भीतर वाला अंतरंग और आदमी का विकसित नहीं हो सका तब। गायत्री मंत्र के चार चरणों में इसी रहस्य का उद्घाटन किया गया है कि हमारी अन्तःचेतना विकसित होनी चाहिए। उपासना का अर्थ मैं आपको समझा चुका, पास बैठ जाना, किसके पास बैठ जाना। जिसके हम पास हम बैठ जाते हैं, उस के रंग में हम रंग जाते हैं। खराब लोगों के संगति में हम बैठते हैं। खराब लोगों के रंग में रंग जाते हैं। हमारे बच्चे बाहियात और निकम्मे हो जाते हैं। पड़ोस के लड़के, बाहियात लड़के हमारे भोले भाले लड़के को बहका ले जाते हैं। सिनेमा दिखाते हैं। बीड़ी पिलाते हैं, और थोड़े दिनों बाद ऐसा बना देते हैं, कि सबसे बाहियात, सबसे निकम्मा हो जाता है, हमारा। संगति का प्रभाव वास्तव में संगति का प्रभाव ऐसा होता है, बुरी संगति का भी प्रभाव हो सकता है और अच्छी संगति का भी। रामायण में एक चौपाई आती है-

“का कहूँ चिक बकहु मराला।”

संगति का प्रभाव देखिए-कौआ कोयल हो जाते हैं, और बगुले मराल-हंस हो जाते हैं। उपासना मीन्स-संगति। किसकी संगति, भगवान् की संगति। भगवान् की कैसी संगति? भगवान् की ऐसी संगति, भगवान् की विशेषताएँ, हमारे जीवन में आयें। भगवान् की अगर विशेषताएँ हमारे जीवन में न आ सकती हैं और हम ये कोशिश न की, भगवान् की विशेषताएँ हमारे भीतर में आयें और हमने उल्टी कोशिश की। क्या उल्टी कोशिश। जैसे कि हम और आप कहते हैं कि हमारा कमीनापन, हमारा घटियापन, भगवान् पर हावी जो जाए। जैसे हम चाहते हैं, वैसा ही भगवान् बन जाए। जैसे निकम्मे हम हैं, जैसे पाजी हम हैं, जैसे दुष्ट हम हैं, जैसे अनाचारी हम हैं, ठीक उसी तरह का भगवान् बन जाए और जो हम चाहते हैं, वो पूरा करे। आप ये चाहते हैं। भगवान् पूरा करें। आपकी मर्जी पूरा करे। आप इसी लायक हैं, कि आपकी मर्जी भगवान् को पूजा करनी चाहिए। आप धूप बत्ती खिलाते हैं, इसके बदले में ये हिमाकत करेगें के भगवान् को आप हमारी मर्जी पर चलना चाहिए। आप धूप बत्ती से द्वव्यज्ञ करके जैसा भी मर्जी चाहे वैसा भगवान् को चलाना चाहते हैं। ये नहीं हो सकता। ये नहीं हो सकता।

ये गलतफहमी है। लोगों के दिमाग पर नजाने कहाँ से हो गयी के बच्चे की तरीके से भगवान् को बहकाया जा सकता है और बच्चे की तरीके से भगवान् को फुसलाया जा सकता है। जो भी हम चाहते हैं, अपनी मर्जी की बात कराने के लिए रजामन्द कराया जा सकता है। ये संभव है। ये बेटे, संभव नहीं है। ये संभव नहीं है। मान लीजिए, हम सब हनुमान जी के भक्त हैं, और हर रोज हनुमान जी की उपासना करते हैं। हमारा पड़ोसी मर जायें ये हमको बहुत दुःख देता है और दूसरा पड़ोसी कहे ये हमारा पड़ोसी मर जायें क्योंकि हमको बहुत दुःख देता है। दोनों भगत हैं न। हनुमान को तो इस बात की कमी भी नहीं है के हमको मनोकामना पूरी करते समय यही विचार करना चाहिए कि कौन मुनासिफ माँग रहा है। कौन गैर मुनासिफ माँग रहा है। कौन द्वव्यव माँग रहा है। कौन अद्वव्यव माँग रहा है। अब बताइये। हमारी मनोकामना पूरी करके पड़ोसी को मारेगा के पड़ोसी को मनोकामना पूरी करके हमको मारेगा। क्या करेगा हनुमान। बताइये। परेशान करते हैं, हनुमान को। परेशान करते हैं हनुमान को आप। मनोकामना के लिए पूजा नहीं, बेटे। मनोकामना के लिए पूजा है तो आप बन्द कीजिए।

मित्रों! सारे के सारे देश में अज्ञान अध्यात्म के नाम पर अज्ञान। अध्यात्म के नाम पर अज्ञान। अध्यात्म को अज्ञान के निवाली करने के लिए बनाया गया था। ये क्या आफत आ गई। ये क्या हो गया। उलटा अज्ञान, उलटा अज्ञान अध्यात्म में समावेश हो गया। ऐसा नहीं होना चाहिए था। तो क्या होना चाहिए।

मित्रों! पानी बरसता है, हर चीज मुलायम हो जाती है और गीली हो जाती है, तो में ये पूछता हूँ टन गीला होता है कि नहीं होता। नहीं साहब। नहीं होता। और चट्टान में से पत्ता पैदा होता है, नहीं होता। उनको पानी से फायदा उठाने के लिये अपने आपको अनुकूल बनना पड़ेगा। ये सिद्धान्त अगर समझ में आता है तो बात आगे बढ़े। तो अगर आप ये ख्याल कर रखा है, हम जैसे भी कुछ है उसी तरीके से बने रहना चाहते हैं और हमको अपने आप में बदलने की कोई जरूरत नहीं। भगवान् को बदलना चाहिए। भगवान् को अपने कायदे बदलना चाहिए। भगवान् को अपने कानून बदलना चाहिए। भगवान् को अपने नियम बदलने चाहिए। भगवान् को अपनी मर्यादा बदलनी चाहिए। क्यों? क्योंकि हम चलाते हैं-हुकुम।

हुकुम मीन्स मनोकामना। मनोकामना मीन्स हुकुम। आप हुकुम चलाते हैं। आप भगवान् के बाँस हैं। आप भगवान् पर हुकुम चलाना चाहते हैं। आप भगवान् को अपनी मर्जी पर चलाना चाहते हैं। क्योंकि आप हनुमान चालीसा का पाठ करते हैं और आप धूप बत्ती खिलाते हैं। इसीलिए आप चाहते हैं कि आपको भगवान् की मर्जी पर चलना चाहिए। ऐसा नहीं हो सकता। अध्यात्म क्या है। अध्यात्म ये है कि भगवान् की मर्जी के मुताबिक हमको ढलने की कोशिश करनी चाहिए। हमको अपने आपकी पात्रता का ऐसा विकास करना चाहिए ताकि भगवान् का अनुग्रह, भगवान् की कृपा प्राप्त करने में हम समर्थ हो सके।

आज की बात समाप्त।

## हंस बनिए

अपने यहाँ गायत्री माता का प्रशिक्षण दिया जाता है। गायत्री की उपासना में भी लगे हुए है। लेकिन आप भूल जाते हैं, गायत्री किसके कंधे पर सवार होती है और कौन गायत्री को अपने इशारे पर नचाय-नचाय करता है। गायत्री माता की तसवीर को आप रोज ध्यान करते हैं। इस तसवीर में उसका वाहन देखा है न आपने। इस वाहन का नाम है-हंस। हंस के ऊपर गायत्री माता सवारी करती है ये बात शायद आपको समझ में न आयें। क्योंकि, इन्सान के बराबर शरीर जिनका है वो एक जानवर पर पशुओं पर सवारी कर सकते हैं लेकिन पक्षीओं पे सवारी नहीं कर सकते। घोड़े पे आप बैठ सकते हैं। गधे पे आप बैठ सकते हैं। हाथी पे बैठ सकते हैं। ऊँट पर बैठ सकते हैं। भैंस पर बैठ सकते हैं। इन पे कैसे बैठ सकते हैं। लेकिन आप बताईये किसी पक्षी पे जिनका वजन बिचारे का नहीं के बराबर उसके ऊपर कैसे आदमी बैठ पायेगा। ये एक अलंकार है। इसमें यह बताया गया है कि हंस उस व्यक्ति का नाम है, जो उचित और अनुचित का फर्क करना जानता है। आपको उचित और अनुचित का फर्क करना चाहिए। लोगों के रास्तों पर चलने के बल पर आपको अलग खड़े होकर देखना चाहिए कि मुनासिफ रास्ता क्या है, मुनासिफ तरीके क्या है। मुनासिफ क्या है, लोग गलती करें तो आप क्या कर सकते हैं, अब तो गलती का ही जमाना है। आप पानी के बहाव में तिनके की तरीके से बहते हुए चले जायें। भला ये भी कोई समझदारी है। आप हवा में उड़ते हुए पत्तों की तरीके से उड़ते हुए चले जायें भला ये भी कोई समझदारी हुई। आपको वजनदार होना चाहिए। आपको अपनी जिन्दगी के बारे में फैसले स्वयं करने चाहिए। अपने रास्तों का चुनाव करने वालों में आपकी हिम्मत, आपकी सहायक होनी चाहिए।

ईमान और भगवान दो चीज ऐसी हैं, जिनकी सहायता से आप बड़े से बड़े फैसले कर सकते हैं। दुनिया में तो आमतौर से गलत काम होते हैं। लोग तौर से अपने आपको शरीर समझते हैं और शरीर की खुशहाली के लिए जो भी बुरे से बुरा काम हो सकता है, सब करते हैं। लोग तो ऐसे बेअक्कल हैं कि लोगों को आज का फायदा दिखाई पड़ता है, कल का नुकसान कहा दिखाई पड़ता है। जितनी भी सामाजिक कुरितियाँ हैं इसमें क्या बात है। आप बताईये। आज का फायदा, कल का नुकसान। आप भी यही करेंगे। ना। लोगों के रास्ते से हटिये। लोगों के रास्ते से हटकर करके अलग खड़े होकर के नये ढंग से विचार करना शुरू कीजिए कि क्या मुनासिफ है, और क्या मुनासिफ नहीं है। आपका भविष्य किन बातों से बनता है और किन बातों से बनता नहीं है, अगर आप यह बात तय करने लगेंगे तो, में आपको ज्ञानवान कहूँगा। ज्ञानवानों की आपने तवालिश पढ़ी है न। भगवान बुद्ध का नाम सुना है। भगवान बुद्ध में क्या विशेषता हुई। भगवान से क्या वरदान मिला। इनको क्या विशेष सम्पदा मिली। आप उनके जीवन को पढ़िए। बोद्ध वृक्ष के नीचे, एक पैड़ के नीचे जिसके नीचे उन्होंने तप किया था उनको एक खास चीज मिल गई। उस खास चीज का नाम था-विवेक। दूर की बात समझने का उनको माहा मिल गया उन्होंने कहा सारी दुनिया से प्रभावित होना नहीं है। हमको दूसरे को

प्रभावित करना है। दूसरें जो मुनासिफ मान भी सकते हैं लेकिन अधिकांश बातें खासतौर से जीवनयापन करने के सम्बन्ध में, जीवन की सम्पदाओं को उपयोग करने के सम्बन्ध में अधिकांश लोगों की राहें गलत हैं, लोगों के ढरें गलत हैं। उन्होंने अपने आपको भगवान बुद्धने अलग से खड़ा करके शुरू किया और जमाने की ओर से आँखे बन्द कर ली और स्वयं अपने भीतर देखा और अपनी जिम्मेदारियों को देखा, अपने भविष्य को देखा, अपने कर्तव्यों को देखा और उन्होंने वो फैसले किये जिसके आधार पर एक सामान्य राजकुमार भगवान का अवतार कहलाने में समर्थ हुआ। उस जमाने में क्या होता था। उन्होंने जरा भी विचार नहीं किया। उन्होंने यह कहा कि मुनासिफ क्या है। जो मुनासिफ था, वह इन लोगों से कहा। यज्ञों में हिंसा होती है, ना। हम हिंसा नहीं करेंगे। इनकी बात वेदों में लिखी है तब। भगवान बुद्ध वेदों के बारे में जानकार भी थे। तो उन्होंने कहा वेद में ऐसा लिखा है तो वेद तो आपको नहीं मानना चाहिए। फिर लोगों ने कहा वेद तो भगवान बनाये हैं। तो उन्होंने ये कहा अगर भगवान ने ऐसे वेद बनाये हैं, जिसमें के नैतिक सिद्धान्तों का परिपालन नहीं हुआ है तो फिर ऐसे भगवान को मानने की आवश्यकता क्या है, तो उन्होंने भगवान को मानने से इन्कार कर दिया। कहने का अर्थ ये है कि उन्होंने विवेक को। बुद्ध का अर्थ है ये विवेक। ठीक वास्तविकता। वास्तविकता को उन्होंने अंगीकार कर लिया और उन्होंने यह फैसला कर दिया जो वास्तविकता होगी, सच्चाई होगी हम सिर्फ उसी बात को मानेंगे और उन बातों को नहीं मानेंगे। इसीका नाम है-आत्मज्ञान। इसीका नाम है-ब्रह्मविद्या। इसीका नाम है-प्रज्ञा। इसीका नाम है-ऋतम्भरा। मैं आपसे यही निवेदन कर रहा था। गायत्री की महत्ता को जानिए और उसका वाहन बनना शुरू कीजिए। उसके वाहन की दो ही तो विशेषता है, एक तो यह है कि नीर और क्षीर को अलग कर देता है। पानी और दूध को अलग कर देता है। इस दुनिया में जो कुछ भी मिला हुआ है, गफला है। सब गुड़ गोबर मिला हुआ है। कहीं सच्चाई की झलक दिखाई पड़ती है और उसीके साथ में उठाई और बेईमानी का कितना गहरा फूट दिखाई पड़ता है। आप अलग किस तरीके से करेंगे आपकी वृक्षशीलता के माध्यम से यह सम्भव है के आप दोनों को अलग कर दें। राजहंस के बारे में ये बताया गया है के “किया हंसा मोती चरे, या लंघन मर जायें”। लंघन मरना ठीक है। अगर आप ईमानदारी से नहीं कमा सकते। मुनासिफ जिन्दगी नहीं जी सकते। तो ऐसी जिन्दगी जीने से क्या फायदा। आप नहीं जीये। नहीं जीयें से मेरा मतलब ये है आप गरीबी में गुजारा कर लें। कंगाली में गुजारा कर लें। तबीबी में गुजारा कर लें। तबीबी में गुजारा ढेरों आदमी करते हैं। कोई धरी बिमारी के मरता है। कोई जैल खाने चला जाता है। किसी के बाल-बच्चें खराब हो जाते हैं। किसीके ऊपर और मुसीबतें आ जाती है। ढेरों आदमी इस दुनिया में ऐसे हैं, जो किसी पर ऐसे मुसीबत उठाते हैं। आप सच्चाई की बजह से, ईमानदारी की बजह से और दानतबाजी की बजह से अगर मुसीबत उठा लें तो क्या हर्ज की बात है। सच्चाई की थोड़ी सी झलक और बेईमानी का अधिक से अधिक मद्दा यही तो लोग व्यवहार है। दुनिया यही तो है। आप अलग कीजिए और हंस बनने की कोशिश कीजिए। समाप्त।

। ओम शांति ।



## उत्थान और पतन

सृष्टि का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है, के पतन स्वाभाविक है और उत्थान कष्टसाध्य बनाया गया है। पानी को आप छोड़ दीजिए, नीचे बहता हुआ चला जायेगा अनुमान से और आपको कुछ नहीं करना पड़ेगा। नीचे गिरने में कोई मेहनत नहीं करनी पड़ती है और कोई प्रयास करना नहीं पड़ता है। ऐसा ही संसार का कुछ ऐसा विलक्षण नियम है। पतन के लिए, बुरे कर्मों के लिए आपको ढेरों के ढेरों साधन मिल जायेंगे, सहकारी मिल जायेंगे, किताबें मिल जायेंगीं और कोई नहीं मिलेगा तो आपकी पिछले जन्म-जन्मांतरों के संग्रह किये हुए कुसंस्कार ही इस मामले में आपकी बहुत मदद करेंगे। वो आपको गिराने के लिए प्रोत्साहन करते रहेंगे। पापपंख में घसीटने के लिए बराबर आपका मन चलता रहेगा इसके लिए न किसी अध्यापक की जरूरत है, न किसी कोई सहायता की जरूरत है। ये तो अपनी नेचर जैसी ही हो गई है पीछे गिराने वाली कठिस्थ इस संसार में इतनी भरी हुई पड़ी है जिससे बचाव अगर आप न करें, उसका विरोध आप न करें, उसका मुकाबला आप न करें तो आप विश्वास रखिए। आप निरन्तर गिरेगें। पतन की ओर गिरेगें। सारा समाज इसी तरफ चल रहा है। आप निगाह उठाके देखिए। आपको कहाँ ऐसे आदमी मिलेंगे, जो सिद्धान्तों को ग्रहण करते हो और आदर्शों को अपनाते हो। आप गिन के देखिए। अधिकांश लोगों में से बुराई की ओर चलते दिखाई पड़ेंगे आपको। पाप और पतन के रास्ते पर उनका चिंतन और मनन का अन्तर रहा हुआ है। उनका चरित्र भी गिरावट की ओर और उनका चिंतन भी गिरावट की ओर। फिर आपको क्या करना चाहिए। अगर आपको ऊँचा उठना है तो आपको भीतर से हिम्मत इकट्ठी करनी चाहिए। क्या हिम्मत करें। ये हिम्मत करे कि ऊँचे उठनेवाली जिस तरीके से संकल्प बल का सहारा लेते रहे और हिम्मत से काम लेते रहे, व्रतशील बनते रहे। आपको उस तरीके से व्रतशील बनना चाहिए। देखा है, न आपने। जब जमीन पे से ऊपर की तरफ चढ़ना होता है तो जीने का इन्तजाम करते है, सीढ़ी का इन्तजाम करते है। तब मुश्किल से धीरे-धीरे चढ़ते है। गिरने में क्या देर लगेगी। अंतरिक्ष की उलकाएँ अपने आप गिरती रहती है। जमीन पे रॉकेट ओर फँकने पड़ते तब करोड़ों-अरबों रूपया खर्च करते है। तब तक रॉकेट का अंतरीक्ष में उछलना सम्भव होता है। तो क्या करना चाहिए। आपको यही करना पड़ेगा चौरासी लाख योनियों में भटकते हुए कुसंस्कार ढेरों के ढेरों इकट्ठे कर लिए है, अब इन कुसंस्कारों के खिलाफ बगावत शुरू कर दीजिए। कैसे करे। अपनी सोच मजबूत बनाईये। सोच मजबूत नहीं बनायेंगे तब। तब फिर आपके पुराने कुसंस्कार फिर अंदर आ जायेंगे। मन को समझाये। जरा सी देर समझ जायेगा फिर उसी रास्ते पर आ जायेगा। तो क्या करना चाहिए।

‘संकल्प शक्ति’ का विकास करना चाहिए। ‘संकल्प शक्ति’ किसे कहते है। ‘संकल्प शक्ति’ उसे कहते है कि जिसमें ये फैसला कर दिया जाता है कि हमको ये करना है। ये हर हालत में करना है। करेंगे या मरेगें। इस तरीके से संकल्प आप किसी बात का कर ले, तो आप

विश्वास रखिए फिर आपका ये मानसिक निश्चय वो आपको आगे बढ़ा देगा। अगर आपका मनोबल नहीं है और निश्चय बल नहीं है ऐसे ख्वाब देखते रहते है ‘करेंगे’ ‘करेंगे’ विद्या पढ़ेंगे, व्यायाम करना शुरू करेंगे, फलाना काम करेंगे, ये करेंगे। आप कल्पना करते रहिए। कभी कुछ नहीं करते। कल्पनाएँ आज तक किसी की भी सफल नहीं हुई और संकल्प किसी के अफल नहीं हुए।

संकल्प शक्ति का सहारा लेने के लिए व्रतशील बनना चाहिए। आप व्रतशील बनिए। श्रेष्ठ काम करने के लिए, उन्नति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए आपको कोई न कोई संकल्प मन में लेना चाहिए। ये काम करेंगे। ये काम करने तक के लिए कई आदमी आशा करके जीते है। ये अच्छा काम है, कर लेंगे। ये काम नहीं करेंगे। जैसे नमक नहीं खायेंगे, घी नहीं खायेंगे वगैरह वगैरह। ये क्या है। इसको देखने में तो कोई खास बात नहीं है। आपको अमुक काम करने से नमक का क्या ताल्लुक है और आपने घी खाना बन्द कर दिया तो कौन-कैसी बढ़ी बात हो गई। जिससे की आपको काम में सफलता मिल जायेगी। इन चीजों में तो नहीं है-दम। लेकिन दम उस बात में है कि आपने इतना कठोर निश्चय कर लिया है कि और आपने सुनिश्चित योजना बना ली है कि हमको करना ही करना है। करना ही करना है। तब फिर आप विश्वास रखिए आपका काम पूरा होता चला जायेगा। चाणक्य ने निश्चय कर लिया था कि जब तक मन वंश का नाश न कर लूँगा तब तक बाल नहीं बाँधूँगा। ये अपना व्रत और प्रतिज्ञा को याद रखने का एक प्रतीक है। एक सिम्बॉल है। प्रतिज्ञाएँ तो भूल जाते है, लेकिन अगर कोई ऐसा बहिरंग अनुशासन भीतर लगालें तो आदमी भूलता नहीं।

आदमी का संकल्प मजबूत होना चाहिए। अध्यात्म का प्राण ही वह संकल्प है। संकल्प बल न हो तब। हिम्मत न हो तब। तब फिर आदमी बेतनजेर लोटे की तरीके से इधर-उधर भटकता रहता है। संकल्प कर लेने के बाद तो आदमी की आधि मंजिल पूरी हो जाती है।

संकल्प बल! एक लाठी की तरीके से है। जो आपको गिरने से बचा लेती है और आप ऊँचा चलने के लिए आगे बढ़ने के लिए हिम्मत प्रदान करता है। आपको भी अपने मनोबल की वृद्धि के लिए आत्मानुशासन स्थापित करनी चाहिए। ब्रह्मचर्य के सम्बन्ध में, खान-पान के सम्बन्ध में, समयदान और अंशदान के सम्बन्ध में आपको कोई न कोई कोई न कोई काम ऐसे जरूर करने चाहिए जिसमें की यह प्रतीत होता हो कि आपने छोटा-सा संकल्प लिया पूरा करने में सफल रहें। ये मनोबल बढ़ाने का तरीका है। संकल्प बल मनोबल से ज्यादा बढ़ चढ़कर के आदमी के व्यक्तित्व को उभारने वाली है। प्रतिभा को उभारने वाली है। उसके चरित्र को उभारने वाली है और कोई वस्तु है ही नहीं और ये संकल्प बल की वृद्धि के लिए ये आवश्यक है कि आप छोटे-छोटे छोटे-छोटे ऐसे कुछ नियम लिया कीजिए थोड़े समय के लिए ये काम न कर लेंगे, जब तक हम ये न करेंगे, मशरन शाम को इतने किताब न पढ़ लेंगे तब तक सोयेंगे। काम को जब तक पूरा न कर लेंगे सोयेंगे नहीं मशरन हम सबैरे का भोजन जब तक पूरा न कर लेंगे खायेंगे नहीं। ये क्या व्रतशीलता के साथ में जुड़ा हुआ अनुशासन है।

व्रत और संकल्प आदमी की जिन्दगी के लिए बहुत बड़ी किंमती चीज है। आप ऐसे ही किया कीजिए। समाप्त।

आज की बात समाप्त।



9

## बोना और काटना

भाइयो! लगभग ६० वर्ष हो गए। ६० वर्ष के समय में हमारे गुरुदेव घर पर आये थे और उन्होंने ने कई बातें कही। उन्होंने ने जो कुछ कहा सब मालूम पड़ा। इससे यह मालूम पड़ा के हमारे तीनों लोक के साथ हमारे रहे है, जो पहले जन्म का दृश्य दिखा दिया तो हमारा भय दूर हो गया और फिर बातचीत शुरू हो गई। “अपनी पात्रता को विकसित करने के लिए चौबीस ... के चौबीस साल तक चौबीस पुरश्चरण करने चाहिए। एक साल में एक जौ की रोटी और छाछ पर रह कर के किस तरीके से चौबीस साल काटने पड़ेगे।” ये पूरी विधि बताने के बाद में एक और नई बात बताई। “बोना और काटना।” तुम्हारे पास जो कुछ भी चीज है, बोना शुरू करो भगवान के खेत में और वो सो गुना होकर तुम्हें मिल जायेगा। रिद्धि और सिद्धि का संचय नहीं किया जाता। फोकट में नहीं मिलती। कोई ऐसा नियम नहीं है कि कोई रिद्धियाँ बाँट रहा हो, कोई सिद्धियाँ बाँट रहा हो, कहीं से मिल रहा हो इस तरह का नहीं है।

किसान बोटा है और काटता है ठीक उसी तरीके से तुमको रिद्धियाँ और सिद्धियाँ बोनी पड़ेगी और काटनी पड़ेगी। उन्होंने कहा-“तुम्हारे पास क्या-क्या वस्तु है।” मालूम नहीं क्या वस्तु है। तो उन्होंने कहा देखों। समय और श्रम तुम्हारे पास में है, वह भगवान के खेत में बोओ। कौन-सा भगवान। विराट भगवान। जो चारों ओर समाज के रूप में विद्यमान है। उसके लिए तुम अपना समय और श्रम खर्च कर डालों। वो सो गुना होकर के मिल जायेगा। अच्छा एक। नम्बर दो। रिद्धि तुम्हारे पास में है, भगवान की दैवी सम्पदाओं में अवकल की बजाय इसका चिंतन करने की, उसका चिंतन करने की, अहंकार का चिंतन करने की, वासनाओं का चिंतन करने की और के बातों का चिंतन करने की अपेक्षा अपने चिंतन करने की जो सामर्थ्य है, उसको सारी की सारी को भगवान के निमित्त लगा दो उनकी खेत में बोओ ये तुम्हारी भक्ति सो गुनी होकर के तुम्हें मिल जायेगी। दो। तीसरी चीज। तुम्हारे पास है-भावनाएँ। भावनाएँ हमारे पास है। हा! आपके पास भी है। तीन शरीर है-स्थूल, सूक्ष्म और कारण। जैसे स्थूल-शरीर में श्रम होता है। सूक्ष्म शरीर में बुद्धि होती है और कारण शरीर में भावनाएँ होती है। यह तीनों चीज को ये भगवान ने हमको दी थी। श्रम और शरीर भगवान ने हमको दिया। बुद्धि किसी आदमी ने नहीं दी। ये भगवान ने दी है। केवल भावनाएँ जो है, भगवान ने दी है, इसी लिए भगवान की दी हुई चीजों को बोना चाहिए। एक चीज इस तरह की है, जो तुम्हारी कमाई हुई है। पहले जन्म से कमाया हुआ हो या इस जन्म में कमाया हो। यह तुम्हारा कमाया हुआ है। भगवान का दिया हुआ नहीं है। वो क्या-धन। धन ही भगवान किसी को नहीं देते। जो चाहे ईमानदारी से, बेईमानी से, मेहनत से, हरामखोरी से चाहे कमालो चाहे मत कमालो। भगवान को उससे कोई लेना-देना नहीं है। धन जो तुम्हें मिला है, तुम्हारा कमाया हुआ तो शायद नहीं है। मैं ने कहा- “मेरा कमाया हुआ कहा से हो सकता है। चौदह-पन्द्रह वर्ष का बच्चा का से धन कमाके लायेगा। पिता जी का दिया हुआ धन है” ये सारे के सारे धन को भगवान के खेत

में बो दो वह सो गुना होकर मिल जायेगा। बस गाँठ बाँध ली और वो ६० साल से बँधी हुई गाँठ मेरे पास ज्यों क्या त्यों चली आ रही है। कुछ भी कमाया हुआ था। हमने सब बो दिया। हमारे पास जमीन थी। उसकी जब जिम्मेदारियाँ खतम हुई तो उसका जो पैसा आया गायत्री तपोभूमि बनाने के लिए दान कर दिया। हमारी बीबी क पास सोना था ६० तोले के करीब वो भी हमने बैच कर के इसको दे दिया। जो कुछ भी हमारे पास था सब खाली कर दिया और वो गायत्री तपोभूमि के बनाने में, भगवान का घर बनाने में, भगवान का मन्दिर बनाने में खर्च कर दिया। फिर ८० विधा जमीन कुलकाष्ट की हमारे पास रह गई थी फिर उसको भी खर्च कर डाला। उसको काहे में खर्च किया। उसको जहाँ हमारा जन्म हुआ है, उस गाँव में हमने एक हायर सेकन्डरी स्कूल बना दिया। कभी आप जायें तो देखना आपकी तबियत बागबाग हो जायेगी और फिर वहाँ के रोगमुक्तक कोई अच्छा अस्पताल नहीं है। सैंकडों आदमी बिमार हो जाते है। किसी की मृत्यु हो जाती है। गर्भस्थियों की मृत्यु हो जाती है। तो वहाँ एक अच्छा अस्पताल हमने बना दिया। ये कहाँ से बनाया। ये पैसा पिताजी ने छोड़ा था। उसको हमने खाया नहीं। छोटी उमर में खा लिया हो तो हम नहीं कह सकते लेकिन उसके बाद में हमने किसी का दिया हुआ धन खाया नहीं है। सब खर्च कर डाला। एक-एक पाई खर्च कर डाली। हमारे पास उनका दिया हुआ कुछ भी नहीं। आपके पास कितना धन है। हमारे पास कुछ भी नहीं। तो फिर आप नुकसान में रहेंगे। तो आप नुकसान की बात कहते हो। कभी आप जायें तो हमारा कच्चा मकान था। सारे गाँव में कच्चे मकान थे। हमारा भी कच्चा मकान था। वो टूट के बराबर हो गया। लेकिन यहाँ जहाँ कहीं भी हम रहते है पक्के मकानों में रहते है। बड़े शानदार मकानों में रहते है। बड़े शानदार मकानों में रहते है।

गायत्री तपोभूमि हमने बनाया आप जरा देखिए न कितना शानदार मकान है। लाखों रूपये उसमें लग गए और हमारा मकान देखिए न अखण्ड ज्योति कार्यालय देखिए और आप यहाँ आईये शांतिकुंज देखिए, गायत्री नगर देखिए, ब्रह्मवर्चस देखिए, चौबीसों गायत्री शक्तिपीठों को देखिये। ये जो बिल्डिंगों का किस्सा सुना रहा हूँ। ये जो बिल्डिंग है और बिल्डिंगों के अलावा इनमें जो आदमी रहते हैं, इनमें जो रुपया खर्च होता है, वो गायत्री तपोभूमि में कितने आदमी काम करते हैं। दो सौ आदमी वहाँ काम करते हैं। दो सौ आदमी करीब यहाँ काम करते हैं। इन सबका खाने का, पीने का, कपड़े का, रोटी का ये खर्चा निकलता है। जाने कहाँ से आ जाता है। धन हमारे पास कुछ कम नहीं पड़ता। जरूरत होती है, तो भगवान् की तरफ इशारा कर देते हैं और वो हमारे लिए जो कुछ भी चीजें हैं, सब भेज देते हैं। भगवान् के लिए सब आदमी एक से हैं। जो नियम हमारे ऊपर लागू है, वह आपके ऊपर भी लागू हो सकते हैं। भगवान् न हमारे साथ नाजायज करने वाले हैं और ना आपके साथ कोई बैर विरोध है। वो ही तरीका है कि हमारे जीवन में हमको बताये गये। हमारे गुरुने हमको तरीका बताया था और वह अख्तियार कर दिया और गुरु को हम बहुत धन्यवाद देते हैं और आपको हम शिखाते है, समजाते है और बताते है के आप उसी रास्ते पर चलिए, जिस रास्ते पर हम चले है। आप भी निहाल हो जायेंगे, धन्य हो जायेंगे और क्या कहूँ मैं आपको। बस।

आज की बात समाप्त।

## समयदान का महत्व

यह एक ऐसा समय, जिसमें किसी आदमी को किसी आदमी पर विश्वास रह नहीं गया है। आतंक का वातावरण चारों ओर घिरा हुआ पड़ा है। सड़क पर आप जो चलते हैं मालूम नहीं आपके साथ में पड़ोस में चलने वाला जो व्यक्ति या चाकू आपको भोंक करके आपकी घड़ी भी छीन ले जायेगा, इसका क्या विश्वास है। इंसान का चाल चलन, इंसान का चाल, इतना गंदा, इतना घटिया हो गया है, कि अगर स्थिति यही बनी रहेगी तो कोई किसी पर विश्वास नहीं करेगा। न भाई-भाई पर विश्वास करेगा, न स्त्री पुरुष पर विश्वास करेगी, न पुरुष स्त्री पर विश्वास करेगा, न बाप बेटे पर विश्वास करेगा, न बेटा बाप पर विश्वास करेगा, ऐसा गंदा, ऐसा घटिया, ऐसा बहियात समय है और ये इसलिए भी बहियात समय है कि नेचर नाराज हम से हो गई है, प्रकृति हमसे नाराज हो गई है। पानी बरसाने में उसकी मौज आती है, तो अंधाधुंध बरसा देती है। कहीं उसकी मौज आती है, तो चाहे जितना सूखा-सूखा पड़ता हुआ चला जाता है। कहीं मौसम का ठिकाना नहीं, मौसम पे पानी बरसेगा कि नहीं कोई नहीं कह सकता, और ठण्ड के समय में ठण्ड पड़ेगी, गर्मी के समय में गर्मी पड़ेगी, कोई नहीं कह सकता। भूकम्प कब आयेंगे, कोई नहीं कह सकता, ज्वालामुखी कब फटने लगेंगे, कोई नहीं कह सकता, बाढ़ कब आ जायेगी, इसका कोई ठिकाना नहीं है। नेचर हमसे बिलकुल नाराज हो गई है कि उसने अपना ठीक तरीके से काम करना बंद कर दिया है।

ये ऐसा भयंकर समय है, ऐसे भयंकर समय में क्या आपके लिए कोई जिम्मेदारियाँ नहीं हैं, क्या आपके कोई कर्त्तव्य नहीं हैं, क्या आपके अंदर भावनाएँ नहीं हैं, क्या आप भावना शून्य हो गये हैं, क्या आपका हृदय पत्थर का, लोहे का हो गया है? नहीं, मेरा ख्याल है कि सब लोगों को नहीं हुआ है। ज्यादातर लोगों को तो यही हो गया है कि वे घटते-घटते जानवर के तरीके से बनते जाते हैं। हमें आपसे यही उम्मीद है कि अपना सारा वक्त पेट पालने और संतान पैदा करने के लिए खर्च नहीं करेंगे। अगर आप चाहें तो ढेरों समय बचा सकते हैं। एक आदमी के ८ घण्टा काम करने के लिए काफी होना चाहिए जिसमें कि अपने और अपने बच्चों का गुजारा मजे में कर ले। और ७ घण्टे एक आदमी को विश्राम करने के लिए पर्याप्त होने चाहिए। और पाँच घण्टे घरेलु काम-काज के लिए पर्याप्त होने चाहिए। इस तरीके से आप २० घण्टे में अपने शरीर का और अपने कुटुम्ब का गुजारा कर सकते हैं। चार घण्टे तो आप बड़ी आसानी से निकाल सकते हैं। ये आपकी इच्छा की ऊपर है कि आप अपने उस समय को आलस्य में, प्रमाद में, अवारागर्दी में किस तरह से खर्च डालेंगे, ये आपकी मर्जी है। कौन रोकता है। लेकिन अगर आप चाहें तो समाज के लिए, ये दी हुई परिस्थितियाँ का मुकाबला करने के लिए, समय को ऊँचा उठाने के लिए, इंसान का भाग्य और भविष्य शानदार बनाने के लिए आप कुछ कर सकते हैं, करना ही चाहिए आपको। इसमें क्या नुकसान पड़ेगा, हमारा? मैं यकीन दिलाता हूँ

कि नुकसान नहीं पड़ेगा। जिन्होंने लोकसेवा का काम किया है, अपना समय को लोकसेवा में लगाया हो, वो चाहे गाँधी जी रहे हों, जवाहरलाल नेहरू रहे हों, विनोबा भावे रहे हों, या कोई भी स्वामी रहे हों, स्वामी विवेकानन्द रहे हों, लेकिन जिन लोगों ने अपने समय को समाज के लिए खर्च किया है, वे किसी तरीके से नुकसान में नहीं रहे हैं, वो ऊँचे उठे हैं, आगे बढ़े हैं और हजारों को आदमीओं को ऊँचा उठाया है और आगे बढ़ाया है। और स्वयं भी नुकसान में नहीं रहें। क्या नुकसान में रहें? आप बताईये न। एक का नाम बताईए। गाँधी जी ने वकालत की होती तो वकालत में कितने कमा लेते। लेकिन जब उन्होंने अपने समय सेवा में लगा दिया। सेवा के कार्यों में अपने समय खर्च करने लगे। तो आप बताईये क्या कमी रह गई उनके पास। किसी चीज की कमी नहीं थी। गाँधी जी बड़े शानदार आदमी थे और शानदार आदमी सिर्फ इस लिए हुए कि उन्होंने अपने समय को पेट और सन्तान, पेट और सन्तान जानवर की तरीके से खर्च नहीं किया। परन्तु इन्सान की तरीके से खर्च किया है।

ये समय ठीक ऐसा ही है। यह ऐसे समय में मेरी आप लोगों में से प्रत्येक से प्रार्थना है कि आप समय का थोड़ा-सा अंश निकाल दें। हमने कितनी बार कहा और कितनी बार छपा है कि आप समय दान कीजिए, समय दान कीजिए, समय दान कीजिए। आपने सूर्य ग्रहण और चन्द्रग्रहण के समय पर देखा है। चिल्लाकर चन्द्र पर ग्रहण पड़ा हुआ है-दान कीजिए, दान कीजिए।

इस समय में हमारी भी एक ही पुकार है। समय की भी एक ही पुकार है। महाकाल की भी एक ही पुकार है कि आप समय दीजिए, समय खर्च कीजिए। समय दीजिए, समय खर्च कीजिए। किस काम के लिए खर्च करना चाहिए। आपको इस काम के लिए खर्च करना चाहिए कि लोगों के दिमाग और लोगों के विचारों को आप ठीक कर सके। अगर विचारशीलता और दूरदर्शिता, विवेकशीलता लोगों के अन्दर आई होती, तो दुनिया खुशहाल रही होती। इन्सान, इन्सान नहीं रहा होता देवता हो गया होता और जमीन का वातावरण स्वर्ग जैसा हो गया होता पर विचारशीलता कहाँ है। समझदारी कहाँ है। हमको समझदारी आदमी के अन्दर बढ़ानी चाहिए। अगर समझदारी बढ़ेगी, तो आदमी के अन्दर ईमानदारी बढ़ेगी। ईमानदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर जिम्मेदारी बढ़ेगी। जिम्मेदारी बढ़ेगी तो आदमी के अन्दर बाहदूरी बढ़ेगी। चारों चीजे एक साथ जुड़ी हुई है। इसलिए समझदारी उसका मूल है और ईमानदारी, जिम्मेदारी और बाहदूरी इसके पत्ते हैं, दाड़ियाँ हैं, फल और फूल है। ये हमको समझदारी बढ़ाने के लिए लोगों कि जी और जान से कोशिश करनी चाहिए।

आप लोगों से भी मेरी यही प्रार्थना है कि लोगों की समझदारी बढ़ाने के लिए अपने समय का जितना अंश आप लगा सकते हो उतना अंश लगायें।

ओम शांति।

## ज्ञान सम्पदा

मनुष्य की विशेषता है-ज्ञान। ज्ञान न हो तब, ज्ञान विहीन होने की वजह से चेतन होते हुए भी सब प्राणी को नीचे दर्जे में गिना जाता है। जीवन, तो वनस्पतियों में भी है, पर ज्ञान नहीं। दूसरे भी हैं, मक्खी हैं, मच्छर हैं, कीड़े हैं, मकोड़े हैं। जीवन है। उनमें भी जिन्दगी है। मेढक में भी जिन्दगी है। मछली में भी जिन्दगी है। कछुवे में भी जिन्दगी है। चिड़िया में भी जिन्दगी है। फिर, उनको क्यों हम घटिया दर्जे का मानते हैं। उनकी एक ही कमी है। उनको ज्ञान की कमी। मनुष्य ज्ञान का देवता माना गया है। ज्ञानशील होने की वजह से, मननशील होने की वजह से, विचारशील होने की वजह से मनुष्य का स्तर ऊँचा उठा है। कल्पना कीजिए प्राचीन काल में जब मनुष्य वनमानुष रहा होगा, जब उनको ज्ञान नहीं रह होगा। सामाजिकता का ज्ञान नहीं रहा होगा और जीवन की जिम्मेदारियों का ज्ञान नहीं रहा होगा। अपने गौरव गरिमा और गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषताओं के बारे में जब कोई जानकारी न रही होगी, तब वो भी जैसे डार्विन साहब कहते थे-बंदर की औलाद। वास्तव में बंदर की औलाद के तरीके से इन्सान भी रहा होगा। लेकिन आज पृथ्वी का स्वामी बना हुआ है किस वजह से प्राचीन काल की तुलना में आज आदमी का ज्ञान बढ़ता हुआ चला गया है।

ज्ञान की दो धाराएँ हैं और दोनों को ही बढ़ना चाहिए। एक का नाम वो है, जो हमारी जीविका पैदा करने के लिए काम आती है। उसको शिक्षा कहते हैं। लोक व्यवहार उसी पर शिखा जाता है। बच्चों को स्कूल में जब हम पढ़ाते हैं। ये शिक्षा पढ़ाते हैं। शिक्षा का क्या मतलब। शिक्षा का यह मतलब है कि हमको लोकाचार आये। हमको यह मालूम पड़े कि संसार की बनावट क्या है, भूगोल क्या है, इतिहास क्या है, दुनिया में इन्सानों की चाल-चलन क्या रहे हैं। दुनिया में किस तरीके से उतार चढ़ाव आते रहे हैं? पेड़ कैसे पैदा होते हैं? यह सृष्टि क्या है, राजनीति क्या है, समाज क्या है, एक नागरिक कर्तव्य क्या है, जीविका उपार्जन किस तरीके से करनी चाहिए, अर्थशास्त्र क्या है वगैरह। लोकव्यवहार में प्रवीण के सम्बन्ध में एक। जीविकोपार्जन के सम्बन्ध में दो। जो जानकारीयाँ हमको मिलती हैं उसीका नाम शिक्षा है। आवश्यक है। शिक्षा आवश्यक है। शिक्षा न होगी तो आदमी अपने शरीर को सम्भाल किस तरीके से पायेगा। समाज के साथ में तालमेल बिठा किस तरीके से पायेगा। अपनी अकल का उपयोग किस तरीके से कर पायेगा। ये सब जानकारीयों के लिए शिक्षा तो आवश्यक है। शरीर के जीवन के लिए भौतिक जीवन को ठीक बनाये रखने के लिए शिक्षा बेहद जरूरी है। लेकिन ये केवल भौतिक जीवन ही

तो नहीं है। एक और भी तो हमारा जीवन है। जिसको हम आध्यात्मिक जीवन कहते हैं। चेतना भी तो कोई हमारे भीतर है, आत्मा भी तो कोई हमारे भीतर है, विवेक भी तो कोई हमारे भीतर है, संवेदनाएँ भी तो कोई हमारे भीतर है। इन सबको ठीक रखने के लिए एक ओर चीज की जरूरत है, जिनका नाम है-विद्या। ज्ञान की धारा उसी को कहते हैं, जिसको विद्या कहा गया है।

विद्या का पूरा नाम अध्यात्म विद्या आप माने तो भी हर्ज नहीं है। ऋतम्भरा प्रज्ञा आप माने तो भी हर्ज नहीं है। विवेक आप इसको कहे तो भी हर्ज नहीं है। इसको आप गायत्री कहें-प्रज्ञा कहें तो भी हर्ज नहीं है। वास्तव में महत्व उसीका है। दुनिया की जानकारियों के बारे में तो ढेरों आदमी ऐसे हैं, जिनकी जानकारियाँ बहुत हैं। प्रचार बहुत हैं। आदमी विद्यावान कम हैं क्या दुनिया में, कलाकार कम हैं क्या दुनिया में, चतुर आदमी कम हैं क्या? दुनिया में क्रिया कुशलों की कमी है क्या? आप बताइए न, जेल खानों में पड़े हुए लोगों को आपने नहीं देखा है। एक से एक होशियार आदमी। एक से एक समझदार आदमी। जालसाजों में पढ़े लिखे आदमी ही ज्यादा रहते हैं। ना समझ आदमी जब कटी कर सकते हैं और छोटे-मोटे काम कर सकते हैं। पर दुनिया में जो बड़े-बड़े जालसाजियाँ हुई हैं ये पढ़े लिखें लोगों ने की है। पर शिक्षा की बात में नहीं करता। शिक्षा अपनी जगह पर मुबारिक मुझे कुछ लेना देना नहीं है। लेकिन आप लोगों की सेवा में मैं कुछ बात कह रहा हूँ विद्या के बारे में कह रहा हूँ। आपको विद्या का महत्त्व समझना चाहिए। आप विद्या का महत्त्व समझ सके तो मजा आ जायेगा।

विद्या से मतलब ये है कि आप अपने विचारों का इस्तेमाल किस तरीके से करें। आप अपने शरीर का इस्तेमाल किस तरीके से करें। साधनों का इस्तेमाल कैसे करें। परिस्थितियों का इस्तेमाल किस तरीके से करें। अपने पास जो साधन और सामान मिला हुआ है या मिल सकता है हम उनका इस्तेमाल किस तरीके से कर पायेंगे। बस उसीका नाम विद्या है। इसीका नाम विद्या है, इसके लिए सामान्य लोक ज्ञान से काम नहीं चलता। इसके लिए आदमी को थोड़ा ऊँचे स्तर पे बैठ करके विचार करना होता है और यह देखना पड़ता है कि इन्सान की गरिमा और इन्सान की महत्ता का इस्तेमाल किस तरीके से किया जाय। इसके लिए क्या करना चाहिए बस इसीका नाम विद्या है। अगर विद्या किसी को मिल जायें तब, तब धन्य हो जाते हैं। शास्त्रों में विद्या की महत्ता के लिए न जाने एक से एक न जाने कैसे कहाँ गया है-विद्या अमृतमश्नुते विद्या को अमृत कहा गया है। जिसने विद्या प्राप्त करली उनको अमृत मिल गया। जो उसी तरीके से उचित और अनुचित का हल जानता है उसके लिए फिर कोई चीज मुश्किल नहीं रह जाती।

आज की बात समाप्त।

## 12 व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण

अपनी जिन्दगी में कुछ नये काम सामिल करिये। क्या काम सामिल करें। व्यक्ति निर्माण, परिवार निर्माण और समाज निर्माण। एक काम आता है-व्यक्ति निर्माण। अपने आपको निर्माण की कसम खाके जाईए। हम अपने स्वभाव को बदल दें। हम अपने चिंतन को बदल दें। हम अपने आचरण को बदल दें। एक। दूसरा, परिवर्तन जो आपको यहाँ से ले के जाना चाहिए। वो यह ले के जाना चाहिए कि आपका परिवार के सम्बन्ध में जो मान्यता है। जो आधार है। उनको बदल दें। परिवार के व्यक्ति तो नहीं बदले जा सकते। केवल पुराने परिवार बरखाश्त कर दें और उनमें नये व्यक्ति को उनमें सामिल कर दें। या उनका रवैया बदल दे, मकान बदल दे या शिक्षा बदल दें। या उनका स्वरूप बदल दें। यह तो नहीं हो सकता। पर आपका अपने कुटुम्ब के प्रति जो रवैया है। जो आपके सोचने का तरीका है, उसको आप आसानी से बदल सकते हैं। समाज के प्रति आपके कुछ कर्त्तव्य है, दायित्व है। समाज के प्रति अपने कर्त्तव्यों और दायित्वों से आप छूटकारा पा नहीं सकेगें। समाज की उपेक्षा करते रहेंगे, तो फिर आप विश्वास रखिए समाज आपकी उपेक्षा करेगा और आपका कोई बजह नहीं मिलेगा। आप सम्मान नहीं पा सकेगें। आप सहयोग नहीं पा सकेगें। उपेक्षा करते रहिए। अपने आप सीमाबद्ध हो जाईए। इक्कड़ हो जाईए। अकेले रहिए। खुद ही खाईए और खुद ही मजा उड़ाईए। फिर, फिर आप ये और भूल जाईए। फिर हमको समाज में सहयोग नहीं मिल सकेगा। नहीं सम्मान मिल सकेगा।

सम्मान और सहयोग ही मनुष्य के जीवात्मा की भूख और प्यास है। अगर आप उनको खरीदना चाहते हो तो कृपा करके यह विश्वास कीजिए कि जो समाज के प्रति आपके दायित्व है, जो कर्त्तव्य है, वो आपको निभाने चाहिए। आप उन कर्त्तव्यों और दायित्वों को निभा लेंगे तो बदल में सम्मान और सहयोग ही लेंगे। जिससे आपके खुशी आपकी प्रशंसा और आपकी प्रगति में चार चाँद लग जायेंगे। दो काम हुए न। आत्मा को अपने आपका निर्माण करना, अपने परिवार का निर्माण करना। दो। और अपने समाज को प्रगतिशील बनाने के लिए, उन्नतिशील बनाने के लिए कुछ न कुछ योगदान देना। तीन काम अगर आप कर पायें तो आपको समझना चाहिए कि आत्मा की भूख को बुझाने के लिए और आत्मिक जीवन को समुन्नत बनाने के लिए कदम बढ़ाना शुरू

किया। अन्यथा ठीक है, आप शरीर के लिए मरे ही है और शरीर के लिए जीये ही है। शरीर ही तो आपका सुख है। इन्द्रियाँ सुख ही आपकी आकांक्षाएँ हैं। वासना और तृष्णा ही आपको सबसे प्यारे मालूम पड़ती है। इनमें तो आपका जीवन खर्च हो गया न। और किस काम में खर्च हुआ। अब कृपा कीजिए। सादा जीवन-उच्च विचार के सिद्धान्तों का परिपालन कीजिए। सादगी, सादगी, सादगी, सादगी, सिफाईस्तार, मितव्ययता। अगर अपने ये अपना सिद्धान्त बना लिया हो। तो आप विश्वास रखिए, आपका बहुत कुछ काम हो जायेगा। बहुत समय बच जायेगा आपके पास। और उन तीनों कर्त्तव्यों को पूरा करने के लिए आप विचार भी निकाल सकेगें, श्रम भी निकाल सकेगें, पसीना भी निकाल सकेगें, पैसा भी निकाल सकेगें। और अगर आपने व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को जमीन-आसमान की तरीके से ऊँचा उठा कर के रखा हुआ तो आपको स्वयं का ही पूरा नहीं पड़ेगा। इसके लिए आपको अपनी कमाई से भी ज्यादा नहीं हो सकता, आपका। फिर आपको बेईमानी करनी ही चाहिए, जरूरत लेनी चाहिए, कम तोलना ही चाहिए, फिर दूसरों के साथ में दगाबाजी करनी ही चाहिए। फिर आपको कम देना ही चाहिए। जो भी आप बुरे से बुरे कर्म कर सकते हैं। वो करने चाहिए। अगर आप अपने हविश को कम नहीं कर सकते और आपनी भौतिक खर्च की महत्वाकांक्षा को और बड़प्पन की महत्वाकांक्षा को काबू में नहीं कर सकते। फिर आत्मा की बात कहा चलती है। आत्मा की उन्नति की बात का सवाल कहा उठता है। आत्मा को भी महत्व दीजिए।

शरीर ही सब कुछ नहीं है। शरीर की आकांक्षाएँ ही सब कुछ नहीं है। इन्द्रियाँ ही सब कुछ नहीं है। मन की लिप्सा और लालसा ही कुछ नहीं है। ये आत्मा जो आपके भीतर है और आत्मा अगर आपके भीतर है, तो आप ये भी विश्वास रखिए उनकी भूख और प्यास है। आत्मा के अनुदान ही असीम और असंख्य है। लेकिन उनकी भूख और प्यास भी है। पौधों के द्वारा, पेड़ों के द्वारा हरियाली भी मिलती है। छाया भी मिलती है। फल-फूल भी मिलते हैं। प्राणवायु भी मिलती है। पर उनकी जरूरत ही तो है न। आप ये क्यों भूल जाते हैं। खाद्य की जरूरत नहीं है। पानी की जरूरत नहीं है। रखवाली की जरूरत नहीं होती। आप रखवाली नहीं करेगें, खानपान न करेगें तो पेड़ों से और पौधों से आप क्या आशा रखेंगे। इसी तरीके से जीवात्मा का पेड़ और वृक्ष है, बड़ा विश्वास माँगता है। और क्यों माँगता है।

मैंने निवेदन किया न व्यक्ति निर्माण और परिवार निर्माण और समाज निर्माण के लिए आपकी गतिविधियाँ चलनी चाहिए और आपके प्रयत्नों को अग्रगामी होना चाहिए।

आज की बात समाप्त।

13

## जन्मदिन का महत्व

मनुष्य का जीवन भगवान् का दिया हुआ सबसे बड़ा उपहार। भगवान् के खजाने में ऐसी मूल्यवान् वस्तु कोई भी नहीं है। जैसे कि मनुष्य को मानव जीवन के रूप में दी गई। इस मूल्यवान् वस्तु का लाभ तब है, जब इसका उपयोगिता समझी जाए और उपयोगिता समझ करके उसका ठीक तरीके से सदुपयोग किया जाए। हम सदुपयोग कर नहीं पाते क्योंकि उसका मूल्य नहीं समझ पाते। जिस चीज का मूल्य समझ में न आए भला इसका सदुपयोग का सवाल कहाँ उत्पन्न होता है।

जीवन को हम निरर्थक वस्तु मानते हैं और ये मानते रहते हैं, ये कोई भार हम पर टंगा हुआ है, और हमको भार वहन करना पड़ रहा है। असंख्य मनुष्य ऐसे हैं, जिन्दगी जीते तो हैं, पर ऐसी जिन्दगी जीते हैं मानो किसी ने उनके ऊपर वजन लाद दिया गया हो, जबकि सही बात ये है, इतनी बड़ी संपदा पाकर मनुष्य के लिए ये गुंजाइश है कि अपना जीवन सफल और सार्थक बनायें। साथ-साथ भगवान् ने जिस विशेष प्रयोजन के लिए ये मनुष्य को दिया है, उसको भी पूरा करें। यह विशेष उद्यान को सुंदर और समुन्नत बनाने के लिए भगवान् ने बड़ी आकांक्षाओं के साथ, बड़े अरमानों के साथ ये सम्पदा मनुष्य को सौंपी है और यह अपेक्षा की है कि इस धरोहर का और अमानत का अच्छे से अच्छा उपयोग कर के दिखायेगा। लेकिन हम कुछ कर नहीं पाते। क्योंकि उसका मूल्य ही नहीं समझते।

मनुष्य जीवन के सम्भावनाएँ इतनी बड़ी हैं कि इस सम्पदा का ठीक तरीके से उपयोग किया जा सके तो मनुष्य भौतिक और आध्यात्मिक दोनों ही क्षेत्रों में उच्चस्तरीय सफलताएँ प्राप्त कर सकता है। सफलताओं के सभी द्वार उसके लिए खुले हुए हैं। शर्त ये है कि आदमी अपनी सत्ता की महत्ता को समझे और यह जाने कि हमारे पास कितनी बड़ी मूल्यवान् चीज है। हमारा शरीर कितना मूल्यवान् है। हमारा मस्तिष्क कितना मूल्यवान् है, इसके भीतर जो अन्यान्य गुण, कर्म और स्वभाव की विशेषताएँ भरी पड़ी हैं। वो कितनी किंमती है। अगर उसका ठीक इस्तेमाल कर सके, तब। न कर सके, तब तो हीरा भी हो कोई भी चीज हो बेकार ही गन्दी होगी और बेकार ही साबित होगी।

मनुष्य जीवन की महिमा और गरिमा हरेक को समझाना आवश्यक है ताकि उसके ठीक तरीके से उपयोग करने की उमंग उसके मन में से उठे। इसके लिए आवश्यक समझा गया परिवार के प्रत्येक सदस्यों को जन्मदिन मनाना चाहिए और जन्मदिन मनाने के माध्यम से उसको यह प्रकाश दिया जाना चाहिए अपनी मूल्यवान् मानव जीवन का महत्व समझ सके। गरिमा को जान सकें। इसकी उपयोगिता का अंदाज लगा सके और

उसका ठीक तरीके से इस्तेमाल कैसे किया जा सकता है, इसके सम्बन्ध में कुछ महत्वपूर्ण निर्णय कर सके। ये सब उद्देश्यों की पूर्ति करने के लिए जन्मदिन उत्सव मनाना आवश्यक समजा गया और यह अनिवार्य कर दिया गया है कि अपने परिवार के किसी भी सदस्यों को बिना अपना जन्मदिन मनायें बिना नहीं रहना चाहिए। वो चालाक समझें और क्यों ऐसा अनिवार्य नियम बनाया गया? ऐसा अनिवार्य नियम इसीलिए बनाया गया है कि आदमी को एक भावनात्मक वातावरण में, एक उत्साहवर्धक वातावरण में कुछ महत्वपूर्ण बातें समजायी जा सके।

कुछ महत्वपूर्ण अवसर ऐसे होते हैं, जिनमें किसी आदमी को उत्साहित किया जाता है और उत्तेजित किया जाता है। उत्साहित हुए मनुष्य के दिन आदमी को विशेष प्रसन्नता भी होती है और उस गरमा-गरम वातावरण में अगर उसने कुछ नियम लिए हैं, कुछ प्रतिज्ञा ली है तो उसको निभाने के लिए तैयार भी रहता है। और आदमी को ये विचार अनुमानिता अपनाने के लिए बाँधित किया जाता है के वह 'स्व' महत्ता को समझें। 'स्व' के गौरव गरिमा को स्वीकार करें और जीवन को इस तरीके से बितायें जिसमें कि इस महिमा और गरिमा को अक्षुण्ण बने रहने का मौका मिलें। कुछ मनुष्य के जीवन में अवसर ऐसे होते हैं, जो आदमी को खुशी प्रदान करते हैं। जब खुशी प्रदान करते हैं तो आदमी के लिए, आदमी के वो दिन बहुत महत्वपूर्ण बन जाते हैं। आदमी कभी कुशती जीत करके आयें या खिलौने से कोई उपहार लेकरके आयें या जीत के आयें तो उनके चेहरे की खुशी देखी जा सकती है। कितना खुश प्रसन्न मालूम पड़ता है और ऐसी खुशी से उनके शारीरिक और मानसिक शक्तियों का विकास होता है। खुशी और उत्तेजना दे करके हम आदमी को आंतरीक और बहिरंग दोनों ही जीवनो में विकसित और उत्तेजित कर सकते हैं। सामान्य निरसता के जीवन से छूट कर के कुछ ऐसे प्रकाशपूर्ण जीवन में प्रवेश करता है। जो इसके लिए आगे चलकर के उस समय महत्वपूर्ण साबित हो।

ऐसा ही अवसर जन्मदिन के आधार पर हरेक को मिलें अपने सम्बन्ध में गौरव गरिमा को खुशी हासिल करने के लिए और आत्मबोध का आधार खड़ा करने के लिए। आत्मबोध मनुष्य जीवन का सबसे बड़ा ज्ञान है। अपने बारे में जान लेना। अपने को देख लेना। भगवान् ने गीता में बार-बार कहा-“अपने आप को जानो। आपने आप देखो, अपने आप समजो, अपना उद्धार करो और अपने को गिराओ मत।” ये आत्मबोध मनुष्य को हो जायें तो समझना चाहिए कि आध्यात्मिक उन्नति का द्वार खुल गया। अपने सम्बन्ध में गहराई से विचार करने के लिए आत्मबोध का दिन जन्मदिन का दिन बहुत ही महत्वपूर्ण माना जाता है।

आज की बात समाप्त।

## सच्ची आध्यात्मिकता

हमारे इतने ऊँचे संस्कार और मनुष्य का जीवन कुछ खास काम के लिए मिला हुआ और तुम्हें भगवान ने एक खास समय पर भेजा। अपनी जिम्मेदारियों को पूरा करने के लिए भेजा। यह पिछड़ा हुआ देश, पिछड़ा हुआ राष्ट्र, पिछड़ी हुई सभ्यता, पिछड़ी हुई संस्कृति, पिछड़ी हुई कौम, पिछड़ी हुई मखड़ी सुदा सारी की सारी कराह रही थी, त्राय-त्राय कर रही थी और तुम्हारी सहायता की जरूरत थी और मानवता इतिहास हाथ पसारे खड़ी थी और तुम इन्कार करते हुए चले गये और तुमने कहाँ हमको बाल-बच्चे पैदा करने है, हमको धंधा करना है, हमको नौकरी कमानी है और हमको पैसा कमाने है और हमको पैसा जमा करना है। आपने ये कहा और इंसानियत ने आपसे कहा- आपके पैसे की जरूरत है, हमको। इंसानियत ने कहाँ आपके वक्त की जरूरत है, हमको। इंसानियत ने कहा आपके पसीने की जरूरत है, हमको और आपने इन्कार कर दिया। आप गुन्हेगार है और आप गुन्हेगार को चाहे बारह भगवान क्यों न हो। मैं अब चलता और मैं अब गया। अब मैं हिमालय गया और मैं अपने मित्रों को इस तरीके से पाप और पतन के रास्ते पर नहीं चलने दूँगा। मैं आपको खाऊँगा और उठा करके ले जाऊँगा और पेट फाड़ना होगा तो मैं फाड़ डालूँगा और बेरहमी से पेट फाड़ूँगा। खाली आशीर्वाद देना मेरा काम नहीं है। पेट फाड़ना भी मेरा काम है।

आशीर्वाद, आशीर्वाद तो हर उदार आदमी दिया करता है और देना चाहिए। जिन्हें उन्होंने लिए अपना धर्म और अपना ईमान कायम रखा है। दिया जाना हर आदमी का कर्त्तव्य और देना उनका फर्ज है। आध्यात्मिकता का तकाजा है, ये। आपके ऊपर एहसान नहीं करता, मैं। किसी पर नहीं एहसान नहीं करता। ये मेरी आध्यात्मिकता और किसी भी आध्यात्मिकता वो चैन से रहने देगी नहीं। उसको हर वक्त कोसती रहेगी, घायल करती रहेगी और ये कहती रहेगी “इंसान खाने के लिए तू नहीं पैदा हुआ है, देने के लिए पैदा हुआ है। खाने के लिए नहीं पैदा हुआ है, तू देने के लिए पैदा हुआ है।” देने का तेरा अधिकार है बता क्या तूने दुनिया में दिया। आध्यात्मिकता खाती है, काटती है, भगवान पूछता है, भगवान जवाब सलब करता है हर इन्सान से और जब भगवान आता है किस आदमी के पास तो यही कहता हुआ चला आता है “मैंने तुम्हें दुनिया की सबसे बड़ी निगावत और सबसे बड़ी दौलत इन्सान की जिन्दगी दी और इन्सान की जिन्दगी का तुमने किस तरीके से इस्तेमाल किया, जवाब दें। गुन्हेगार जवाब दें। जवाब दें। गुन्हेगार, मुझे जवाब दें।” भगवान यही सवाल करता हुआ चला आता है। भगवान एको-एक से पूछता चला आता है “तू ने मुझे क्या दिया” और हम भगवान से तकाजा करते हुए चले जा रहे हैं। हमारे तीन लडकियाँ हैं, चौथा लडका कहाँ है और हमको तो ढाईसो रूपये मिलते हैं, साठे चारसो रूपये की तरक्की कहाँ हुई और हमारे पास अस्सी विधा खेत है, सवा सो विधा खेत कहाँ है। हम भगवान को शिकायत करते चले जाते हैं कि हमको नहीं दिया गया और भगवान कहता रहता है, हमको नहीं दिया गया। इन्सान, जब भगवान

आयेगा आदमी के भीतर तो यह कहता हुआ चला जायेगा कि इन्सान उदार होना चाहिए। इन्सान को दयालु होना चाहिए। इन्सान को देने वाला होना चाहिए। आदमी के पास जो है उसको दोनों हाथों से देना चाहिए।

मित्रों ! ये मैं इंसानियत के तराजे से अपनी आध्यात्मिकता के तराजे से, अपनी आत्मा के तवाजे से और अपने भगवान के तकाजे से अगर मैं आप लोगों को सहायता करता हूँ, मदद करता हूँ तो आप जान लीजिए आपके ऊपर मेरा कोई एहसान नहीं है। मेरा एहसान मेरे अन्तरात्मा के ऊपर है। जो मुझे हर वक्त कोसती रहती है कि- “बेहुदे ! दुनिया को देकर के जा, खा करके मत जा। गद्धार होकर के मत जा” यहाँ पर देने के लिए इन्सान पैदा किया गया है।

मित्रों ! आप में से हर आदमी की हालत ये हो जायेगी, जब आपके पास भगवान आयेगा। गायत्री मंत्र उसके पास आयेगा। आप में से हर आदमी की हालत ये होगी, जिस तरह से मेरी है। जब कभी भी राम आपके पास आये न, आप उसी तरीके से होकर रह लीजिये, जिस तरीके से हनुमान होकर के रह रहा था और आप, आप सचमुच कृष्ण आपके पास आये न तो उस तरह से रह लीजिए, जिस तरह अर्जुन होकर के रहा था।

मित्रों! ये शिक्षण, ये शिक्षण है आध्यात्मिकता का है। ये गायत्री मंत्र का शिक्षण है। आप कहेंगे गुरुजी हमको गायत्री मंत्र का चमत्कार दीजिए और आपकी रिद्धियाँ-सिद्धियाँ ऐसे कोई चमत्कार दुनिया में नहीं है और कर्मकांड, कर्मकांडो का कोई महत्व, मूल्य दुनिया में नहीं है। वाल्मीकि डाकु का मरा-मरा स्नान करना सार्थक हो गया और शबरी का, शबरी का राम-राम देना सार्थक हो गया और आपका गायत्री का पाठ करना धूल में गया और आपको भागवत का पाठ करना जहन्नुम में चला गया और आपकी गीता और रामायण के पाठ हवा में, भाड़ में चले गये। लेकिन शबरी, शबरी का राम-राम चमत्कार दिखाता रहा। जमीन पर सूखा पड़ा हुआ, गंदा वाला बैर, सूखा हुआ बैर, सड़ा हुआ बैर खाते हुये चले गये भगवान। क्यों, क्यों खाया उसने बैर। उन्होंने कहा-शबरी में बैर नहीं खाता। मैं मोहब्बत खाता रहता हूँ, मैं आत्मा खाता रहता हूँ, मैं ईमान खाता रहता हूँ, मैं दृष्टिकोण खाता रहता हूँ, मैं महानता खाता रहता हूँ। मेरी खुराक तो यह है। जो कोई आदमी मुझे यह खुराक खिला देते हैं, उसको खाकर के मैं धन्य हो जाता हूँ। मैं तो मोहब्बत पीता रहता हूँ, प्यार पीता रहता हूँ। इन्सानों के पास मोहब्बत कहाँ ? स्वार्थों से डूबे हुए, कामनाओं से डूबे हुए, तृष्णाओं से डूबे हुए, लोभ से डूबे हुए इन सब पाँच पंखों में जलते हुए इंसान के पास पानी कहाँ है ? पानी रहा होता तो उनकी आत्मा शांत हो गई होती, तृप्त हो गया होता। शीतलता का अनुभव जीवन में किया होता। दूसरों को उल्लास दिया होता। ए अभागे, आप ये देखते हुए इन्सान पानी उनके पास कहाँ ? हिम की छोकरियों ने एक कटोरी भर छाश पिलाया और उन सारे आँगन में नाच नचाकर के दिखाया।

मित्रों ! यही मेरे जीवन की कहानी है, यही मेरे जीवन की आध्यात्म। यही मेरी उपासना थी। यही मेरे साधना के संस्कार।

आज की बात समाप्त।

## अखण्ड दीपक

दीपक मैंने जलायें, अखण्ड दीपक मैंने जलाया और अखण्ड दीपक के सामने बैठा रहा, गायत्री मंत्र का जप करता रहा और भावविभोर आप जैसे लहलाते हैं ऐसे ही मैं लहलाता रहा और मैं अपने आपसे पूछता रहा के “ दीपक की तरीके से तू जल सकता है, दूसरों को रोशनी देने के लिए” स्वयं का दीपक, कान्ही कौडी का तेल, एक कान्ही कौडी का स्नेह घी इन सबको मिलाकर के अगर ये नन्हा सा दीपक दूसरों को रास्ता दिखा सकता है, दूसरों को रोशनी दे सकता है। अपने आपको जला सकता है, दूसरों को रोशनी देने के लिए। इन्सान “क्या तू अपने जीवन को दीपक जैसा नहीं जला सकता।” अखण्ड दीपक मेरा जलता रहा अगर मैं घी जलाने वाले लोगों में से नहीं हूँ। मैं तेल जलाने वालों में नहीं हूँ। मैं तीनों को बरबाद करने वाले लोगों में से नहीं हूँ। मैं उन लोगों में से हूँ के जो कर्मकाण्डों के माध्यम से अपनी भावनाओं को परिष्कार करने पर यकिन करता हूँ और अपनी भावनाओं परिष्कृत करता रहा। दीपक की तरीके से मेरा जीवन, जलता हुआ मेरा जीवन, दूसरों को रोशनी देता हुआ जीवन, लाखों आदमीओं को रास्ता दिखाता हुआ मेरा जीवन, लाखों आदमीओं के लिए द्वार खोलने, द्वार खोलता हुआ जीवन। मेरा जीवन है, दीपक जैसा। जला हूँ, मैं। शुरू से लेकर आखरी तक मैं जलता रहा। मैं जलता रहा पर १५ वर्ष से मुझे जलाया गया। ६० साल से मैं सिर्फ जलना जानता हूँ। दूसरा कुछ नहीं जानता हूँ और अगले वाले दिन जो मैंने हिमालय जाकर महसूस करना है। हिमालय पे क्या होता है। सिनेमा होता है, क्या। नहीं होता। क्या होता है, मिठाईयाँ बिकती हैं, क्या। नहीं। कचोड़ियाँ बिकती हैं, क्या। क्या होता है, हिमालय पे। रात भर जंगली जानवर चिल्लाते हैं और रात भर बड़े-बड़े अजगर निकलते हैं। पेड़ों के नीचे साय-साय होती रहती है और ठण्ड जब पड़ती है, तो आदमी का खून जल जाता है और आदमी को चलना-फिरना मुश्किल हो जाता है। ऐसे, ऐसे कष्टसाध्य जो कि जेलखानों से भी ज्यादा मुसीबत से गुजरा हूँ। मैं जा रहा हूँ। इसी लिए जा रहा है। जलने के लिए। मुझे जलना है इसी लिए जलना है कि लोगों के अन्दर वो आग और गरमी पैदा कर सकूँ।

आदमी का ईमान सो गया, आदमी की आत्मा सो गई, आदमी का दृष्टिकोण सो गया, आदमी का आदर्श सो गया। आदमी तो हैवान की तरीके से जिन्दा है-पेट पालने के लिए और बच्चा पैदा करने के लिए। इसके अन्दर आत्मा सो गई। आत्मा सो गई

इसलिए तो मैं जा रहा हूँ। गरमी पैदा कर रहा हूँ। मुर्दा, मुर्दे को जी जाना चाहिए, जीवित हो जाना चाहिए। अपनी आग पैदा करने के लिए मैं जा रहा हूँ। अपने आपको मैं रगड़ने जा रहा हूँ और रगड़ के इसलिए मैं चाहता हूँ, आग पैदा करूँ, रोशनी पैदा करूँ, गरमी पैदा करूँ, रफतार पैदा करूँ, रोशनी पैदा करूँ, दृष्टिकोण पैदा करूँ। आत्मा का बोध और आत्मा का ज्ञान जिसको मैंने पहले भी आपको प्रकाश के रूप में उल्लेख किया था ऊँचा दृष्टिकोण के रूप में। मैं उसके लिए जा रहा हूँ और मैं अब चला। लेकिन मैं जहाँ कहीं भी जाऊँगा मैं आपको यकिन दिलाता हूँ आपको मैं दिखूँगा नहीं पर आप मुझे दिखाई पड़ते रहेगे। मेरे आँख से आँख देख नहीं सकते। मेरे पाँच शरीर हैं, आप जानते हैं, क्या। पर पाँचसो लोग जानते हैं एक जगा पर एक, दूसरी जगह पर दूसरा काम करता रहता हूँ। एक शरीर से मैं बराबर लेख लिखता रहता हूँ और बराबर मेरी पुस्तकें छपती रहती हैं। एक शरीर से आप यही बैठे हुआ मुझे देखते हैं, न। बराबर मैं सबेरे से आता हूँ, शाम तक बैठा रहता हूँ। रात को फिर पूजा करता हूँ, उठ जाता हूँ और साढे चार को पूजा करता हूँ, आप खाली देखते हैं, मुझे। उस वक्त कौन रहता है, मेरे साथ मालूम है, क्या। मेरे पास पूरा टाईम है, आठ घण्टे का मैं आठ घण्टे लिखता हूँ बराबर। आठ घण्टे मेरे गुरु को दिया है। पत्रिकाएँ लिखी जाती हैं, जो भी चीजे लिखी जाती हैं, शास्त्र लिखे जाते हैं, पूरा आठ घण्टे मैं लिखता हूँ पर आठ घण्टे का अलग। आप नहीं जानते मैं कहाँ से वक्त लाता हूँ। एक आदमी नहीं बहुत आदमी। एक घोंसले के अन्दर हम पाँच आदमी रहते हैं, पाँच कोष बताये जाते हैं लेकिन पाँच कोष उस कलेवर के अन्दर रहते और पाँच आदमी के बराबर काम करते हैं। मैं आप लोगों की देखभाल रखूँगा, मेरा प्यार आप पर बरसता रहेगा मैं आपको साझेदार रख रहा हूँ। लेकिन ये विदाई अन्तिम विदाई नहीं है। ये विदाई शारीरिक दृष्टि से विदाई हो, लेकिन आत्मा की दृष्टि से ये विदाई नहीं हो सकती। आत्मा मना नहीं करती, आत्मा से बनी हुई महोब्बत धूल में चली गई। आप लोगों को मैंने मुद्दतों से अपनी महोब्बत की जाल में जकड़ के रखा था और मैं उस समय जकड़ के रखूँगा जब तक हमारा और आपका कोई न कोई एक फैसला नहीं हो जाता। या तो मुझे नरक में जाना पड़ेगा या तो आपको भी स्वर्ग में चलना पड़ेगा। या तो कुत्ते के साथ युधिष्ठिर को जमीन पर रहना पड़े या तो कुत्ते को युधिष्ठिर के साथ। कुत्ता और युधिष्ठिर की बात तो बहुत बड़ी हो गई। मेरे साथ आप न जाने कितने जन्मों के साथ जुड़े थे और उसी जुड़े हुए टुकड़े से मैंने खींच करके बुलाया। अपना बहोत प्यार आप पर उड़ेलने के लिए, आप पर सारी महोब्बत उड़ेलने के लिए मैंने खींच कर आपको बुलाया।

आज की बात समाप्त।



## ईसा मसीह

ईसा मसीह ने चलते वक्त अपना माँस काट-काट कर अपने हर शिष्य को दिया था एक धरोहर के रूप में और अपना खून लाल तलाब के रूप में हर अपने शिष्य को बाँटा था और ये कहाँ था “ये मैं हूँ उसको तुम खाओ मैं तुम्हारे भीतर समा जाऊँगा और तुम मेरे भीतर समा जाओ।” मैंने अपना ज्ञान जो भी शिखा था वास्तव में मैं बराबर आपसे बोलता रहा हूँ, रातभर आपसे बात करता रहा हूँ। आप सोये रहे है और मैं आपके सिरहाने बैठा-बैठा आपको थप्पीयाँ लगाता रहा हूँ, लोरियाँ सुनाता रहा हूँ, महोब्बत के गीत शिखता रहा हूँ न जाने क्या से क्या कहता रहा हूँ और मैंने बहुत खुशामत की है, आपको। इन्सानों! मेरे मित्रों! तुम मुझे देख नहीं पाओगे क्या? तुम मुझे केवल गुरुजी आशीर्वाद देने वाले ही मानते रहोगे क्या? मैं जलता हुआ इन्सान हूँ और मैं सही इन्सान हूँ क्या तुम जलते हुए इन्सान नहीं बन सकते? क्या भगवान लौ में समाने के लिए लोगों के अन्दर लौ की आग, ज्ञान की आग पैदा नहीं कर सकते। न जाने मैं क्या से क्या कहता रहा हूँ। मेरी चारों वाणियाँ बोलती रही है। आपके हृदय से मैं बोलता रहा हूँ। आपकी आत्मा से बोलता रहा हूँ। कानों से बोलता रहा हूँ। मस्तिष्क से बोलता रहा हूँ। आप जाईए और आप मेरी आवाज को आज बाँध कर के चले जाईए। मैं आपको छोड़ने वाला नहीं। जहाँ कही भी रहूँगा बोलता रहूँगा और आपसे लड़ता रहूँगा। बोलता रहूँगा और लड़ता रहूँगा, कहता रहूँगा। अभी इस चादरों में आप सोये रहे है, तब मैंने आपको बहुत कुछ कहा है। यह कहना उस वक्त बन्ध हो जायेगा, जब आप मेरी राह पर चलेगें। उस राह पर, जिस राह पर मैं अपने गुरु के ईशारे पर चला और मैंने अपनी जिन्दगी सारी की सारी उसके कहने के मुताबिक ये खर्च कर डाली।

मैं चाहता हूँ आपका वक्त उन कामों में खर्च हो। मैं चाहता हूँ आपका पसीना उन कामों में खर्च हो। मैं चाहता हूँ आपका पैसा उन कामों में खर्च हो। जिन कामों के लिए मैं जीया, जिन कामों के लिए मैं पैदा हुआ। जिन कामों में मैं ये कल्याण चाहता हूँ, संसार का कल्याण देखता हूँ और मानवता का उत्थान। इसी लिए छोटी साधना के रूप में मैं आपको १० पैसा रोज खर्च करने की बात कहता रहा, एक घण्टे समय खर्च करने की बात कहता रहा। छोटी-छोटी बातें थी, शुरूआत लेकिन आज ये शुरूआत है, जो मैं बहुत चाहता हूँ, हर वक्त कहता हूँ, अगले दिन आयेगें जब आपको मेरी तरीके से अपना सर्वस्व भगवान के चरणों पर समर्पित करना होगा और अपनी सारी की सारी चीजे समेट करके भगवान के चरणों पे लाकर रखनी पड़ेगी ताकि भगवान के पास जो कुछ है उन

सबको पाने के हकदार आप बन जायें।

रविन्द्रनाथ टेंगोर की एक छोटी वाली कहानी। रविन्द्रनाथ टेंगोर ने एक गीत गाया, कविता गायी, उन्होंने गाया “दरवाजे-दरवाजे भीख माँग के लिये अनाज की भर ली मैंने झोली। एक आया भिखारी मेरे सामने उसने कहा तेरी झोली में से हमको भी दें।” रविन्द्रनाथ टेंगोर उसकी एक महत्वपूर्ण कविता मैंने बड़ी हिम्मत की और एक दाना झोली में से निकाला और उसकी हथेली पर रख दिया और भिखारी मुस्कराता हुआ चला गया एक दाना लेकर। मैं आया अपने घर रविन्द्रनाथ टेंगोर ने गाया “मैंने अपनी झोली को पलट दिया और उस अनाज की झोली में से एक बड़ा वाला सोने का दाना रखा हुआ मैंने पड़ा हुआ मैंने देखा। वो फूट-फूट करके रोया, मैंने कहा क्यों न मैंने अपनी झोली सारी की सारी उस भिखारी को सोंप दिये ताकि झोली सारे के सारे सोने के दानों से भर जाती।” यही है, मेरे सारे के सारे जीवन का निचोड़। यही है, मेरी उपासनाओं का निचोड़। यही है, मेरी साधना का निचोड़। यही है, मेरी जोबन्त का निचोड़। मैंने अपनी सारी झोली, सारा वक्त, सारा पैसा, सारी शक्ति, सारा अक्कल, सारा दिमाग अपने भगवान के चरणों पर रख दिया और भगवान के पास जो कुछ भी चीजे थी, जो कुछ भी उसके पास करामाते थी, जो कुछ भी रिद्धियाँ-सिद्धियाँ थी। जो कुछ भी चमत्कार थे। जो कुछ भी विभूतियाँ थी। वो सारी की सारी लाकर के मुझे दे दिया। मैं कहता रहा “मुझे नहीं चाहिये, तेरी सिद्धियाँ” वो कहता रहा “मुझे नहीं चाहिये, तेरा धन” मैं कहता रहा “मुझे नहीं चाहिये, तेरी रिद्धियाँ” वो कहता रहा “मुझे नहीं चाहिये, तेरा वैभव”।

मित्रों! हम तो इसी तरीके से धक्कामुक्की करते रहे और हमारी धक्कामुक्की दूसरी तरह की होती तो कहते “भगवान तेरी जेब काट करके रहूँगा” और भगवान कहता “एक कण भी नहीं दूँगा।” ऐसी धक्कामुक्की रही होती तो आपकी तरीके से मैं भी भगवान से लड़ाई करता लेकिन मेरी लड़ाई बड़ी महत्वपूर्ण लड़ाई है।

मैं चाहता हूँ, ऐसी लड़ाई आपको और भगवान के बीच में करनी हो तो आप लोग भी मेरी तरीके से आध्यात्मिकता का आम आध्यात्मिकता का लाभ है और अपने इसी जीवन में धन्य होकर के जायें। जैसा मैं धन्य होकर के अपने ६० वर्ष को पूर्ण करता हुआ विदाई आप लोगों से ले रहा हूँ।

आज की बात समाप्त।

## पूजा, उपासना के लाभ

अब मैंने लोगों को बताया कि भगवान की पूजा - उपासना करने की प्रक्रिया अगर सही हो तो आदमी के पास वो सारे चमत्कार आ जायेंगे और सारी सिद्धियाँ आ जायेंगी, सारा प्रभाव उत्पन्न हो जायेगा, जो पुराणों में - ब्रह्मग्रन्थों में लिखा हुआ है। फर्क केवल एक ही है कि पूजा-उपासना सही हो, सही किस तरीके से हो वो उदाहरण बताकर के लोगों को दिखाया। लोगों को उदाहरण बताकर के दिखाया कि हमारा दैनिक जीवन तपस्वी का जीवन होना चाहिए और साधक का जीवन होना चाहिए। हम कामधंधा करें, व्यापार करें, उसमें हमारी ईमानदारी जुड़ी रहनी चाहिए। पूजा उपासना मैंने की और पूजा उपासना जो मैंने की अपने आप में साबुन लगाने के लिये की। अपनी-अपनी मर्जी का हमें साबुन किस तरीके से बराबर घिसा जाता है। इस तरह हमने बार-बार राम का नाम लिया साबुन के तरीके से। भगवान् की खुशामद क्यों करूँ, मुझे कोई खुशामद नहीं करनी है। मुझे खुशामद से बहुत नफरत है। मैं खुशामद भगवान् की भी नहीं करूँगा। क्यों करूँ मैं भगवान् की खुशामद। नाक मैं किसी से सामने भी नहीं रगड़ सकता। भगवान् के सामने भी नहीं। भगवान् अपने घर के हैं, तो मैं अपने घर का हूँ। मैं नाक रगड़ूँ, क्यों रगड़ूँ भगवान् के सामने नाक। मैं गिड़गिड़ाऊँ, क्यों गिड़गिड़ाऊँ भगवान् के सामने। मैं किसी के सामने नहीं गिड़गिड़ा सकता। मैं गिड़गिड़ाऊँगा, तो अपनी आत्मा के सामने गिड़गिड़ाऊँगा और अपने मन के साथ गिड़गिड़ाऊँगा, अपने पुरुषार्थ के सामने गिड़गिड़ाऊँगा। मैं कहूँगा कि मैं पुरुषार्थ के सामने गिड़गिड़ाता हूँ, तू अपने रास्ते जहाँ जा और मैं अपने मन के सामने गिड़गिड़ाऊँगा। अभाग, तू मेरा सत्यानाश करने के लिए जा रहा है। तू कहाँ भटकता है, जो तेरा सही रास्ता है, वहाँ चल न। भटकता क्यों है? मुझे गिड़गिड़ाना होगा, तो वहाँ गिड़गिड़ाऊँगा। मुझे गिड़गिड़ाना होगा तो मेरी आत्मा के सामने गिड़गिड़ाऊँगा और मैं यह कहूँगा कि 'तू है शक्ति की पूँज और मुझे अशक्त बनाये क्यों फिर रही है? मुझे दरवाजे-दरवाजे भटकने के लिए कह रही है और मुझे पत्थरों के टुकड़ों के सामने नाक रगड़ने के लिए क्यों मजबूर करती है। तेरे पास सब कुछ है और मैं बाहर किससे माँगने जाऊँ, किसके सामने हाथ पसारूँ, तेरे पास सब कुछ है। तू मुझे देती नहीं है।' मैं लड़ूँगा तो अपनी आत्मा से लड़ूँगा। मैं खुशामद करूँगा तो अपनी आत्मा की करूँगा। मैं भीख माँगूँगा तो अपनी आत्मा से माँगूँगा। पूजा उपासना मैंने की, इस तरह की भावना के साथ। जैसे आम तौर के लोगों में पाई जाती है, गरीब और भिखमंगे लोगों की मनोवृत्ति के साथ, मैं गरीब और भिखमंगे के तरीके से कभी नहीं गया, भगवान् के पास। आज तक मैंने अपने साबुन के तरीके से अपने राम का नाम लिया और मैंने बुहारी के तरीके से राम का नाम लिया। अपने मकान को साफ करने के लिए और मैंने धोबी के पत्थर के तरीके से राम का नाम लिया, अपनी पिटाई करने के लिए और मैंने रुई धुनने वाले धुनिये की तरीके से राम का नाम लिया, अपने आपकी धुनाई करने के लिए। बार-बार रुई को धुनिया धुनता हूँ न। एक ही काज के ऊपर बार-बार मारता हूँ चोट, तो मैंने धुनिये के हाथ में हथौड़ी लगी रहती है तो टाट के ऊपर बजाता हूँ। मैंने राम के नाम को धुनिये की तरीके से काम किया और वो आदमी भिखमंगु की तरीके से केवल गिड़गिड़ाते हुए अपनी मनोकामना पूरी करने के तरीके से काहिलों, बुजदिलों, कमीनों की तरीके से, छोटी हरकत की वजह से भगवान् के सामने जायें। क्या

भगवान् का प्यार पायेगा, क्या भगवान् के सामने उसकी इज्जत रह रहेगी। कोई नहीं रह जायेगी। मैं एक इज्जतदार आदमी हूँ और मैंने भगवान् के सामने, और उसने मेरी इज्जत को रखा है और मैंने भगवान् की इज्जत को रखा है। मैंने कहा- तेरी इज्जत और तेरी शान मेरी इज्जत और मेरी शान इस बात में है, तेरा बेटा और तेरा बच्चा बनकर मैंने शान की जिन्दगी जी है। मेरी शान के साथ तेरी शान जुड़ी हुई है। मैंने भगवान् की शान को रखा और बताया इन्सान की जिन्दगी देकर के मुझे भगवान् ने कोई गलती नहीं की। भगवान् की शान को मैंने और मेरी शान को भगवान् ने रखा। भगवान् ने कहा कि जा, तेरी शान में कोई बट्टा आने वाला नहीं है। मैं एक शानदार आदमी हूँ। मेरी शान में कोई बट्टा नहीं लग सकता और किसीने बट्टा नहीं लगाया। किसी ने ऊँगली नहीं उठाई, और मैंने कोई दाग-धब्बा लगने नहीं दिया।

न जाने मैं क्या से क्या सिखाता रहा लोगों को, अध्यात्म की शिक्षा और प्रक्रिया के द्वारा और लोगों को ये बताता रहा कि शान और इज्जत के साथ मैंने अगर कोई आदमी को उपासना करने के लिए, भगवान् का पल्ला पकड़ने के लिए खड़ा हो जायें तो किसी बात की कमी नहीं रहेगी। तब कोई काम रुका नहीं जा सकता। इतने बड़े-बड़े काम मैंने किये हैं-कोई काम रुका रहा, क्या? भगवान् ने मुझे कहा-गायत्री के माध्यम से लोगों के दिमागों को बदल। मैंने कहा-मेरे पास सामर्थ्य कहाँ है? उसने कहा- "सामर्थ्य तो आत्मा के भीतर रहती है"। बस मैंने आत्मा की सामर्थ्य को तलाश किया और न जाने क्या से क्या, क्या से क्या कितना बड़ा साहित्य दुनिया को बदल डालने के लिए काफी होना चाहिए और क्या लाखों मनुष्यों की क्रिया पद्धति में छाया हुआ हूँ मैं। पचास लाख मनुष्यों को दीक्षा दे चुका हूँ और करोड़ों मनुष्यों के दिल और दिमाग के ऊपर छाया हुआ हूँ, ये कोई चमत्कार नहीं है, क्या?

मुझ जैसा साधनहीन व्यक्ति जिसके पास कोई पैसे की सहायता करने वाला नहीं, जिसको कोई समर्थन करने वाला नहीं, जिसको कोई दहेज देने वाला नहीं था। अकेला आदमी, अकेला आदमी करता है। अकेला आदमी दुनिया को किस तरीके से हिलाता है और अभी मूल्यांकन नहीं किया जा सकता। जरा ठहरिये तो सही। जब मूल्यांकन किया जायेगा किस तरीके से मैंने समाज को निगाह करके रखा साहित्य के द्वारा, शिक्षण के द्वारा, वाणी के द्वारा। वाणी, वाणी को जब मैंने खोला मुँह में से तो लोगों के दिलों को चीरती और कलेजों को फाड़ करके और लोगों के दिमागों को छेदती पार निकल गई, जिस तरीके से बंदूक की गोलियाँ पार सीने में से निकल जाती है उस तरीके से मेरे हविश और मेरे शब्द जो मुँह में से निकलते ही वो लोगों को छेदती रही है और छेदती रहेगी। अभी मैं जा रहा हूँ, क्या। हा। अभी मैं बैखरी वाणी को बन्द कर रहा हूँ और परा, पश्यन्ती और मध्यमा वाणी को फिर काम में ला रहा हूँ। लोगों के दिलों को चरुगाँ और लोगों के कलेजों को हिलाऊँगा और आदमी के दिमाग को।

इस तरह की सामर्थ्य लोगों में देखनी हा देखनी ही चाहिए। हा देखनी, हा ये प्रभाव किसका है। ये प्रभाव विशुद्ध आध्यात्मिकता का है। मेरे जैसे छोटे और मामूली साधनहीन जैसों का नहीं है। मैंने लोगों को ये बताया और दिखाया के जीवन के क्रिया-कलाप के द्वारा और मैंने अपने जीवन के क्रिया-कलाप के कुछ सार यह समझाया कि जब कोई आदमी आध्यात्मिकता का सही उपचार जान सकता हो और सही रास्ते से उसको पकड़ सकता हो तो उसको से हर आदमी को यही लाभ गुंजाइश है, जो मेरे लिये लाभ उठाने की गुंजाईश थी। समाप्त।

आज की बात समाप्त।

## पूजा, उपासना के मर्म

पात्रता का विकास अगर आदमी न कर सका। केवल उसके दिमाग पर ये वहम और ये ख्वाब और ये ख्वाहिश जमा हुआ बैठा हुआ रहा कि लकड़ी की माला और जबान की नॉक से उच्चारण किया जाने वाला मंत्र राम राम राम, राम, राम चिल्लाता रहा, तोते के तरीके से तेह तेह, तेह तेह तोता चिल्लाता रहता है और हम राम-राम जबान में से चिल्लाते रहते हैं। राम नाम जबान के सोने में से चिल्लाया गया हो, बेकार है ऐसा राम का नाम, कोई फर्क नहीं पड़ता। लकड़ी के माला के ऊपर जो गायत्री मंत्र घुमाया गया है, मैं नहीं जानता उसमें फायदा ले सकता है कि नहीं। मैं लाखों बच्चों को जानता हूँ जो शिकायत करते हुए आते हैं और कहते हैं राम का नाम जपा था, हमको कोई फायदा नहीं हुआ और लाखों मनुष्य मेरे पास आते रहते हैं और कहते हैं, हमने गायत्री मंत्र जपा था, पर हमको कोई फायदा नहीं हुआ और मैं इस बात की तारीफ करता हूँ, कोई फायदा न हुआ है और न आगे होगा। लेकिन मैं आपको यकीन दिला सकता हूँ कि यह गायत्री मंत्र अगर सही तरीके से जपा गया हो और सही तरीके से जीवन में धारण किया गया हो और जीवन की नसों-नाड़ियों में, भावनाओं में, विचारणा में ओत-प्रोत किया गया हो, तो आदमी को चमत्कार दिखा सकता है और चमत्कार का सबूत और चमत्कार का नमूना हूँ मैं, जो आपके सामने बैठा हुआ हूँ। मैं एक नमूना हूँ और मैं एक सबूत हूँ। मेरी जिन्दगी के सैकड़ों पन्नों के अध्याय हैं और वह सब बन्द हैं, मैंने सील कर दिया है और मैंने इसलिए सील करके रखे हैं कि मेरे मरने तक के लिए उनको खोल के नहीं रखा जाये। इतने लोगों की मैंने सेवाएँ की, इतने लोगों की सहायताएँ की। उनकी सेवा और सहायता का ब्यौरा इतना बड़ा है कि आपको यह मालूम पड़ेगा कि क्या एक आदमी अपने समस्याओं को पूरा नहीं कर सकता। एक आदमी अपनी ख्वाहिशों को पूरा नहीं कर सकता। एक आदमी इतने ज्यादा मनुष्यों के, इतने ज्यादा किस्म की सहायता करने में समर्थ है। हाँ! मैं कहता हूँ समर्थ हूँ। मित्रों! यह सिंहासन है और इस पर हर आदमी को बैठने का हक नहीं। उस सिंहासन पर बैठने का हक उस आदमी को है, जिसने केवल अपनी जबान से जबान तक सीमित नहीं रखा, गायत्री मंत्र को, ऊँगलियों तक सीमित नहीं रखा, गायत्री मंत्र को, बल्कि इस अमृत को पीता हुआ चला गया और अपने हृदय के अन्तरंग से लेकर के रोम-रोम में परिप्लावित कर लिया। उसको ये चमत्कार देखने का हक है और वो आदमी ये कह सकता है कि हमने गायत्री मंत्र जपा था और हमको फायदा नहीं हुआ, ऐसा आदमी आये मेरे पास और मैं कहूँगा आपको फायदा दिलाने कि मेरी जिम्मेदारी है और मैं अपना तप, अपने पुण्य के अंश काटकर के आपको दूँगा और आपको ये यकीन और ये विश्वास करा करके ले जाऊँगा गायत्री मंत्र के माने है, भावनाओं का परिष्कार, भावनाओं का परिष्कार जो मुझे मेरे गुरु ने शिखाया था। मित्रों! मेरे रोम-रोम में समाया हुआ है। गायत्री महामंत्र बुद्धि का संशोधन करने का मंत्र। मैंने

सारा का सारा दिमाग इस मार्ग पर खर्च किया कि मेरी अक्कल, मेरी विचारणाएँ, मेरी इच्छाएँ, मेरी आकांक्षाएँ, मेरा दृष्टिकोण और मेरे विचार करने के ढंग, मेरी आकांक्षाएँ और मेरी ख्वाहिशें, क्या उस तरह की हैं, जैसे कि एक गायत्री भक्त की होनी चाहिए। मैं अपने आपको बराबर कसता रहा और अपने आपकी परख बराबर करता रहा। खोटे होने की परख, खरे होने के परत, पुराने जमाने के रुपये को कसौटी लगायी जाती थी, पुराने जमाने में जो रुपये चला करते थे, कसौटी लगाई जाती थी। वो खोटा अलग फेंक देते थे, खरा अलग फेंक देते थे। मैंने अपने आपकी कसौटी लगाई और कसौटी बता देती थी के ये खोटा पैसा है, खरा पैसा है। आपकी हर मनोवृत्ति के ऊपर कसौटी लगाता चला गया और मैं यह देखता हुआ चला गया कि मैं कहा खोटा सिक्का हूँ, कहाँ खरा। जहाँ खोटा था, अपने आपको संभालता रहा, जहाँ खरापन था, वहाँ सुधारता रहा। मेरी उपासना का क्रम पूजा-उपासना तक सीमित नहीं है। २४ घण्टे मैंने उपासना की है, २४ घण्टे अपने आपको परिशोधन और संशोधन करने के लिए आग में तपाया है। मैंने हर बार अपनी मनोवृत्तियों की परख की है और मैंने हर बार सफाई मनकी की है। इस लायक अपने मन को बनाया है कि अगर भगवान अपने भीतर आये तो परिशोधन करता चला जाये। यहाँ से नफरत लेकर के न चला जाय। मन की सफाई करने की जरूरत है। भगवान को आदमी की मक्कारीयाँ से और आदमी की लिप्साओं से बहुत नफरत है। नफरत है। भगवान खुशामद से मानने वाले नहीं है। भगवान को नाम अक्षर के उच्चारण करने की जरूरत नहीं है। भगवान की औकात और भगवान ऐसे नहीं हैं, के आप उसकी तारीफ करें। खुशामद करें। बार-बार नाम लें। बार-बार उसके गुणों को गायें। उसके बाद उसको अपने काबू में कर लें, कब्जे में कर लें। इतना कमजोर दिल, इतना कमजोर प्रकृति का भगवान नहीं हो सकता।

हम इन्सान उनको इतना कमजोर समझते हैं के कोई आदमी खुशामद करके जो कुछ चाहे हमसे वसूल कर लें जायें। वह भगवान कैसे हो सकता है। जो व्यक्ति खुशामद करें, तारीफ करें, जो कुछ भी चाहें, हमको मिल जायें। ये मुमकिन है, ये नामुमकिन है। भगवान तुम बड़े अच्छे हो, तुम्हारी नाक बड़ी अच्छी है। तुमने महिषासुर को मार डाला। तुमने फलाने को मार डाला। तुमने कंस को मार डाला। तुमने वृत्रासुर को मार डाला। लाओ। उल्लू कहीं का। आज इसी का नाम पूजा, इसी का नाम उपासना, इसीका नाम ध्यान, इसी का नाम जप। सारा विश्व अज्ञान के अंधकार में डूबा हुआ। भ्रम के जंजाल में फँसता हुआ और अपना वक्त और अपना समय बरबाद करता हुआ। अध्यात्म को बदनाम करता चला जाता है और शिकायत करता हुआ चला जाता है कि हमने भगवान का नाम लिया था, पूजा की थी, खुशामद की थी, मिठाई खिलायी थी, चावल खिलाया था। धूपबत्ती खिलायी थी, आरती जलायी थी, और हमें कोई फायदा नहीं हुआ, कैसे हो सकता है, फायदा।

फायदा होना चाहिए। फायदा, उसका लाभ उठाने के लिए आदमी को अपने जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश करना होगा। जीवन में आध्यात्मिकता का समावेश है- पूजा उपासना का शिक्षण।

आज की बात समाप्त।

## जीवन कैसे जीयें

संसार में हम है। संसार में रह करके, रह करके हम अपने कर्तव्य पूरे करें, हँसी खुशी से रहे, अच्छी तरीके से रहे लेकिन इसमें हम इतना व्यस्त न हो जायें, इतना अगर फँस न जाय कि हमको अपने जीवन के उद्देश्यों का ध्यान ही न रहे। अगर हम फँसेंगे, तो मरेगें। आपने उस बन्दर का किस्सा सुना होगा जो आफ्रिका में पाया जाता है। सिम्बून और जिसके बारे में ये कहा जाता है कि शिकारी लोग उसको चने-मुट्टी भर चने का लालच देकर के उसकी जान ले लेते हैं, लोहे के घड़े में चने भर दिये जाते हैं और सिम्बून उसको खाने के लिए आता है मुट्टी बाँध लेता है, मुट्टी निकालना चाहता है तो मुट्टी निकलती नहीं, जोर लगाता है तो भी नहीं निकलती इतनी हिम्मत नहीं होती के मुट्टी को खाली कर दें, छोड़ दे हाथ उसीसे लेकिन वो मुट्टी को छोड़ना नहीं चाहता है, छोड़ने के न चाह ने का परिणाम ये होता है कि हाथ बाहर निकलता नहीं और शिकारी आता है उसको मार-काट के खतम कर देता है फिर चमड़ी को उखाड़ लेता है। हम और आपकी स्थिति ऐसी है, जैसे आफ्रिका के सिम्बून बन्दरों जैसी।

हम लिप्साओं के लिए, लालसाओं के लिए, वासनाओं के लिए, तृष्णा के लिए, अहंकार की पूर्ति की तरीके से मुट्टी पकड़ करके बन्दरों की तरीके से फँसे रहते और जीवन सम्पदा का विनाश कर देते हैं, जिससे हम को इस बाज आना चाहिए और हम अपने आपको, अपने आपको इससे बचाने की कोशिश करनी चाहिए। हमको अपनी क्षुद्रता का त्याग करना है। क्षुद्रता को अगर हम त्याग कर देते हैं, तो हम खोते नहीं हैं, हम कमाते ही कमाते हैं। कार्लमार्क्स मजदूरों से ये कहते थे कि 'मजदूरों एक हो जाओ, तुम्हें गरीबी के अलावा कुछ खोना नहीं है' और मैं ये कहता हूँ कि 'अध्यात्म मार्ग पर चलने वाले विद्यार्थीओं तुम्हें अपनी क्षुद्रता के अलावा और कुछ नहीं खोना है। पाना ही पाना है। आध्यात्मिकता के मार्ग पर पाने के अलावा कुछ नहीं है। इसमें एक ही चीज हाथ से गुम जाती है, उसका नाम है, आदमी की क्षुद्रता और संकीर्णता।' क्षुद्रता और संकीर्णता को त्याग ने में अगर आपको कोई बहुत कष्ट न होता हो तो मेरी प्रार्थना है कि आप उसे छोड़ दें और आप महानता के रास्ते पर चलें। जीवन में भगवान को अपना हिस्सेदार बना लें। भगवान के साथ आप जोड़ लें। जोड़ लेगें तो ये मुलाकात की हिस्सेदारी आपके बहुत काम आयेगी।

गंगा ने अपने आपको हिमालय के साथ में जोड़ा रखा। जोड़ा रखा गंगा का और हिमालय का तालमेल और उसका रिश्ता-नाता ठीक बना रहा और हमेशा गंगा का पानी खर्च करती रही लेकिन पानी की कमी नहीं की नहीं पड़ने पाई। हिमालय के साथ रिश्ता हम जोड़े, भगवान के साथ रिश्ता हम जोड़े तो हमारे लिए जीवन में कभी अभावों का कभी उस तरह के संकटों का अनुभव न करना पड़ेगा, जैसे कि सामान्य लोग पग-पग पर किया करते हैं। गंगा का पानी सूखा नहीं लेकिन नाली का सूख गया। उसने किसी महान सत्ता के साथ सम्बन्ध मिलाया नहीं, बाढ़ का पानी आया और उछलने लगा। उछलने लगा। बाढ़ का पानी सूखा और नाला सूख गया। नव महिने सूखा पड़ा था। बरसाती नाला

तीन महिने सूखा पड़ा। लेकिन गंगा युगों से बहती चली आ रही है। कभी भी सूखने का नाम नहीं दिया। हम हिमालय के साथ जुड़े, हम भगवान के साथ जुड़े तो हमारी भी सुखने का कभी मौका न आयेगा फिर हम इतनी हिम्मत कर पायें तब। आप हम भगवान को समर्पित कर सके अपने आपको तो भगवान को हम पायें। भगवान को हम पायें। हम भगवान की कला का सारा लाभ उठा सकते हैं। शर्त ये है कि हम अपने आपको, आपनी महत्वाकांक्षाओं को, अपनी कामनाओं को और अपनी विषवृत्तियों को भगवान के सुपुर्द कर दे। हम भगवान के साथ में अपने आपको उसी तरीके से जोड़े, जैसे कठपूतली, जैसे पतंग और जैसे बाँसूरी। न केवल इस तरीके से करे की पग-पग पर हुकुमत चलायें। भगवान के साथ हम अपनी मनोकामना पेश करें। ये भक्ति की निशानी नहीं है। भगवान के आज्ञा पर चलना हमारा काम है। भगवान पर हुकुम करना और भगवान के सामने तरह-तरह के फरमाईश करना ये सब वेश्यावृत्ति का काम है। हम में से किसी की उपासना लौकिक कामनाओं के लिए नहीं बल्कि भगवान की साझेदारी के लिए, भगवान को स्मरण रखने के लिये भगवान का आज्ञानुवर्ती होने के लिए और भगवान को अपना स्मरण रखने के उद्देश्य उपासना होनी चाहिए। अगर आप ऐसी उपासना करेगें तो मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ उपासना सफल होगी। आपसे आपको आंतरिक संतोष मिलेगा। न केवल आंतरिक संतोष मिलेगा पर आपके व्यक्तित्व का विकास होगा और व्यक्तित्व के विकास करने का निश्चित परिणाम ये है कि आदमी भौतिक और आत्मिक तरीके की सफलताएँ भरपूर मात्रा में प्राप्त करता है।

मेरा आपसे अनुरोध ये है कि आप हँसती-हसाती जिन्दगी जीये। खिलती-खिलाती जिन्दगी जीयें। हलकी-फूलकी जिन्दगी जीयें। हलकी-फूलकी जिन्दगी जीयें तो आप जीवन का सारे का सारा आनन्द पायेंगे। अगर आप घुसेगें, घुसेगें तो आप नुकसान पायेंगे। आप अपने कर्तव्यों को पूरा करने के लिए जिन्दगी को जीयें। हँसी-खुशी से जीयें। हमें माली की जिन्दगी जीनी चाहिये। मालिक की नहीं। मालिक की जिन्दगी में बहुत भारीपन है और बहुत कष्ट है। माली की जिन्दगी केवल रखवाली के तरीके से, चौकीदार के तरीके से अगर आप जीयें तो हम पायेंगे। जो कुछ भी कर लिया हमारा कर्तव्य काफी था। मालिक को चिंता रहती है। सफलता मिली या नहीं मिली। मालिक को इतनी चिंता रहती है कि अपने कर्तव्यों और अपने फर्ज पूरे किये की नहीं किये।

दुनिया में रहें, काम दुनिया में करें पर अपना मन भगवान में रखे अर्थात् उच्च उद्देश्यों और उच्च आदर्शों के साथ जोड़ रखें। हम दुनिया में डूबे नहीं हम खिलाड़ी के तरीके से जिये हार जीत के बारे में बहुत ज्यादा चिंता न करे। हम अभिनेता की तरीके से जीयें। हमने अपना पाठ-प्ले ठीक तरीके से किया की नहीं किया हमारे लिये इतना ही संतोष बहुत है। ठीक है, परिणाम नहीं मिला तो हम क्या कर सकते हैं। बहुत सी बातें परिस्थितियों पर निर्भर रहती हैं। परिस्थितियाँ हमारे अनुकूल नहीं रही तो हम क्या कर सकते थे। कर्तव्य हमने हमारा पूरा किया बहुत है, हमारे लिये बहुत है इस दृष्टि से आप जीयें तो आपकी खुशी को कोई छीन नहीं सकता और आपको इस बात की परवाह नहीं मिलेगी कि जब कभी सफलता मिले तब आपको प्रसन्नता हो। २४ घण्टे आप खुशी से जीवन जी सकते हैं। जीवन की सार्थकता और सफलता का यही तरीका है।

आज की बात समाप्त।

## साधक क्या करें ?

साधकों में से कई व्यक्ति हमसे ये पूछते रहते हैं- क्या करें ? क्या करें ? क्या करें ? मैं उनमें से हरेक से ये कहता रहता हूँ ये मत पूछो बल्कि ये पूछो क्या बनें ? क्या बनें ? क्या बनें ? क्या बनें ? अगर आप कुछ बन जाते हैं तो करने से भी ज्यादा किंमती है पर जो कुछ भी आप कर रहे होंगे वो सब सही हो रहा होगा। आप साँचा बनने की कोशिश करें। अगर आप साँचा बनेंगे, तो जो भी गीली मिट्टी आपके सम्पर्क में आयेगी, आपके तरीके से आपकी ढंग की शकल के खिलौने बनते हुए चले जायेंगे। आप सूरज बनें। आप चमकेगें और चलेगें। उसका परिणाम क्या होगा जिन लोगों के लिए आप करना चाहते हैं वो आपके साथ-साथ चलेगें और चमकेगें। सूरज के साथ में नवग्रह और बत्तीस उपग्रह ये सबके सब लोग चमकते हैं और साथ-साथ चलते हैं क्योंकि सूरज चलता है। हम चलें। हम प्रकाशवान हो। हम देखेंगे जिस जनता के लिए हम चाहते थे ये हमारे हमारा अनुगामी बनें और हमारी ये नकल करें आप देखेंगे की आप चलते हैं तो दूसरों लोग भी चलते हैं। आप स्वयं भी नहीं चलेगें और ये अपेक्षा करेंगे कि दूसरा आदमी हमारा कहना माने ये मुश्किल बात है। आप गले और वृक्ष बनें और वृक्ष बनकर के अपने जैसे असंख्य बीज आप पायें के अपने भीतर से आप पैदा कर डालें। हमको बीज की जरूरत है, बीज आईये, बीज बनिए, बीज आईये, बीज लाईये, कहाँ से बीज लायेंगे। आप गलिये, वृक्ष बनिए और अपने भीतर से ही फल पैदा कीजिए और प्रत्येक फल में से ढ़ेरो के ढ़ेरो बीज पैदा कीजिए लेकिन बन के तैयार अपने भीतर से ही क्यों बीज न बनायें।

मित्रों ! जिन लोगों ने अपने आपको बनाया है, उनको ये पूछने की जरूरत न पड़ी 'क्या करेंगे ?' उनकी प्रत्येक क्रिया इस लायक बन गई, इस लायक बन गई कि वो उनकी क्रिया ही सबकुछ करा सकने में समर्थ हो गई, उनका व्यक्तित्व ही इतना आकर्षक रहा कि प्रत्येक सफलता को और प्रत्येक महानता को सम्पन्न करने के लिए काफी था। अर्जुनदेव जी थाली, बरतन साफ करते थे। उन्होंने अपने को आपको अनुशासन में ढालने का प्रयत्न किया था और जब उनके गुरु तलाश करने लगे के हमको कौन-सा शिष्य को उत्तराधिकारी बनाया जाय। सारे विद्वानों की अपेक्षा, सारे नेता और दूसरों गुणवालों की अपेक्षा उन्होंने अर्जुनदेव को चुना। उन्होंने ये कहाँ उनके गुरु रामदास जी ने के अर्जुनदेव ने अपने आपको बनाया है और बाकी आदमी इस कोशिश में लगे रहे कि हम दूसरों से क्या करायें और स्वयं क्या करें बल्कि होना ये चाहिए था के आपने आपको बनाना चाहिए था। अर्जुनदेव ने न कुछ किया न कराया था केवल अपने आपको बना लिया था। इसी लिए उनके गुरु ने ये माना ये सबसे अच्छा आदमी है। सप्तऋषियों ने अपने आपको बनाया। उनके अन्दर तप की सम्पदा थी, ज्ञान की सम्पदा थी। हरिद्वार या जहाँ कहीं भी रहते चले, जो कुछ भी काम उन्होंने कर किया। वो एक महानतम श्रेणी का उच्चस्तरीय काम कहलाया। अगर उनका व्यक्तित्व घटिया होता तो फिर बात कैसे बनती।

गाँधी ने अपने आपको बनाया हजारों आदमी उनके पीछे चलें। बुद्ध ने अपने आपको बनाया हजारों आदमी उनके पीछे चलें। हम अपने भीतर चुंबकत्व पैदा करें। खजाने के अन्दर जो लोहे के कण, धातु के कण जो जमा हो जाते हैं। उसका कारण ये है कि उसके जहाँ कहीं भी खदान

होती है वहाँ चुंबकत्व रहता है। चुंबकत्व से छोटी-छोटी चीजों को खिंचता रहता है। हम अपनी क्वालिटी बढ़ायें। हम अपना चुंबकत्व बढ़ायें। हम अपना व्यक्तित्व बढ़ायें ताकि ये सबसे बड़ा करने के लिए काम है। समाज की सेवा करें। हा! ठीक है। वो भी करनी चाहिए पर मैं ये कहता हूँ समाज सेवा से भी पहले ज्यादा महत्त्वपूर्ण इस बात को ऑफसन है के हमको अपनी क्वालिटी बढ़ानी चाहिये। खनीज में से जो धातु निकलती है, वो कच्ची होती है लेकिन जब पकाकर के ठीक करली जाती है, साफ-सुथरी बना दी जाती है, तो उन्हीं धातुओं का नाम-स्वर्ण, शुद्ध स्वर्ण हो जाता है। उसीका नाम फौलाद हो जाता है। फौलाद हो जाता है। हम अपने आपको फौलाद बनायें। अपनी आपकी सफाई करें, अपने आपको धोये, अपने आपको परफ्यूम करें। इतना कर सकना अगर हमारे लिए सम्भव हो जायें तो समझना चाहिए आपका ये सवाल पूरा हो गया। अब हम क्या करें नहीं क्या ये करें के हम अच्छे बनें। समाजसेवा हा! समाजसेवा भी करना पर समाजसेवा से करने से पहले आवश्यक है कि समाजसेवा के लायक ये हथियार अपने आपको बना लें। ये ज्यादा अच्छा है। हम अपने आपकी सफाई करें। समाजसेवा भी करें पर अपने आपकी सफाई को भूल नहीं जायें। मित्रों! एक और बात कह करके हम अपनी बात समाप्त करना चाहते हैं।

एक हमारा आमंत्रण अगर आप स्वीकार कर सके तो बड़ी मजेदार बात होगी। " आप हमारी दुकान में शामिल हो जायें। आप दुकान में शामिल हो जायें। हमारी दुकान में बहुत फायदा है। इसमें से हर आदमी को मुनाफेदार शेर मिल सकता है। माँगने से तो हम थोड़ा सा ही दें पायेंगे। ज्यादा हम कहाँ तक दे पायेंगे। भीख माँगने वाले को कहाँ किसीने क्या कितना दिया है। थोड़ा सा ही दें पातें हैं। लेकिन आप हिस्सेदार क्यों नहीं बन जाते। अन्धे और पंगे का योग क्यों नहीं बना लेते। हमारे गुरु और हमने साझेदारी की है। शंकराचार्य ने और मान्धाता ने साझेदारी की थी। सम्राट अशोक और बुद्ध ने साझेदारी की थी। समर्थ गुरु रामदास और शिवाजी ने साझेदारी की थी। रामकृष्ण परमहंस और शिवाजी ने साझेदारी की थी। क्या आप ऐसा नहीं कर सकते। क्या हमारे आप शामिलत हो जायें और हम और आप मिलकर के बड़ा काम करें। उसमें से जो मुनाफा आयें वो बाँट लें। अगर आप इतना हिम्मत कर सकते हो और ये विश्वास कर सकते हो कि हम प्रामाणिक आदमी हैं तो जिस तरीके से हम और अपने गुरु की दुकान में साजा कर लिया है। आप आयें और हमारे साथ साजा करने की कोशिश करें। अपनी पूंजी उसमें लगायें। समय की पूंजी, श्रम की पूंजी, बुद्धि की पूंजी हमारी दुकान में शामिल करें और इतना मुनाफा कमायें जिससे कि आप निहाल हो जायें।

हमारी जिन्दगी के मुनाफे का यही तरीका है कि हमने अपनी पूंजी को गुरुदेव के साथ में मिला दिया और उनकी कम्पनी में शामिल हो गये। हमारे गुरुदेव हमारे भगवान की कम्पनी में शामिल है। हम अपनी गुरुदेव की में शामिल है। आप में से हरेक को आवाहन करते हैं कि अगर आपकी हिम्मत है तो आप आयें और हमारे साथ जुड़ जायें और जुड़ करके हम जो लाभ कमायेंगे भौतिक और आध्यात्मिक उनका इतना हिस्सा आपके हिस्से में मिलेगा कि आप धन्य हो सकते हैं और निहाल हो सकते हैं। उसी तरीके से कि जैसे कि हम धन्य हो गये, निहाल हो गये। यही ही साधको से हमारा विनम्र अनुरोध। "

। समाप्त ।

## सामाजिक क्रांति

धर्मतंत्र का तीसरा कार्य जो करने का है, जिससे के मनुष्य की अन्तःचेतना विकसित होता हो। वो है 'सामाजिक क्रांति'। सामाजिक क्रांति के छुट-पुट बुराईयाँ जो सामने दिखाई पड़ती हैं, इनको दूर करने के लिये विरोध और आंदोलन करने की तो जरूरत है ही लेकिन श्रेष्ठ समाज बनाने के लिए जिन रचनात्मक वस्तुओं को जीवन में धारण करने की जरूरत है, वो उच्चस्तरीय सिद्धान्त है, जो व्यक्ति को समाज परक बनाती है। "आत्मवत् सर्वभूतेषु" की मान्यता जन-जन के अन्तःकरण में जगायी जानी चाहिए। हरेक के मन में ये विश्वास होना चाहिये कि जो, जो हम दूसरों से अपेक्षा करते हैं वही हमें दूसरों के साथ में व्यवहार करना चाहिए। सामाजिक क्रांति के लिये ये सिद्धान्त आवश्यक है हर आदमी के मन में गहराई तक प्रवेश कर जाना। हम में से हर आदमी के मन में एक विचार उत्पन्न किया जाना चाहिये के "वसुधैव कुटुम्बकम्" हमारा कुटुम्ब है। दो-पाँच आदमी नहीं बल्कि यह सारी वसुधा हमारा कुटुम्ब है और जिस तरीके से अपने घर का और बाल-बच्चों का हम ध्यान रखते हैं, उसी तरीके से समस्त विश्व में सुख और शांति के लिए ध्यान रखना और प्रयत्न करना आवश्यक है। सामाजिक क्रांति के लिए उन आध्यात्मिक सिद्धान्तों को पुनर्जीवन किया जाना चाहिए जिसमें के महत्त्वपूर्ण ऐसे सिद्धान्त बने हुए हैं, जिसमें व्यक्ति अपने व्यक्तिवाद के ऊपर अंकुश करके समाजपरक बनता जाता है। आत्मःप्रतिकुलानिः परिषाम नः समाचरेः का सिद्धान्त अगर हम अपने जीवन में धारण करलें तो हमारे सामाजिक जीवन में श्रेष्ठता आ जाना स्वाभाविक है। स्वाभाविक है, मिल बाँट खाने की वृत्ति अगर हमारे भीतर हो तो जो आज हम सबके पास है उसी से सबका गुजारा बड़े मजे से काम चल सकता है। हम उदारता भी से उपार्जन करें। जैसे उपार्जन का उपयोग भी उपभोग नहीं। समता हमारे जीवन का अंग रहनी चाहिए। श्रेष्ठ समाजों में समता। जिसमें नर-नारी के समता और आर्थिक समता का भी ऊँचा स्थान होना चाहिये। हम में से प्रत्येक व्यक्ति को श्रेष्ठ नागरिक बनना चाहिये और सहकारिता के सिद्धान्तों को अपनाकर पारिवारिक जीवन में और सामाजिक जीवन में हर काम की व्यवस्था

बनानी चाहिए। जहाँ अनीति और अन्याय जहाँ कहीं भी दिखाई पड़े उससे लड़ने के लिए हमको जटायु जैसा साहस एकत्रित करना चाहिए।

भगवान का अवतार जहाँ कही भी होता है वहाँ, वहाँ ये मान्यता निश्चित रूप से रहती है के भगवान के अवतार जितने भी हुए हैं, अधर्म का विनाश और धर्म की स्थापना करने के लिए हमारे भीतर भगवान की प्रेरणा आये तो दोनों ही क्रियाकलाप हमको समान रूप से अपनानी पड़ेगी। श्रेष्ठ आचरण अपने में और दूसरों में स्थापित करना साथ-साथ अवांछनियता और अनैतिकताएँ अपने भीतर अथवा अपने आस-पास के वातावरण में अगर हमको दिखाई पड़ती है तो उनसे संघर्ष करने के लिए दट जाना चाहिये। अनीति के सामने हम सिर न झुकायें। जहाँ कही भी अनाचार हमको दिखाई पड़ता हो उसमें लोहा लेने के लिए अपनी परिस्थिति के अनुसार असहयोग, विरोध अथवा जो भी सम्भव हो उसमें करने के लिये साहस एकत्रित करें। समाज की सुरक्षा इसी प्रकार से सम्भव है। डरपोक आदमी, कायर आदमी और मुसीबत से डरने वाले आदमी, पाप से भयभीत होने वाले आदमी, गुंदागर्दी से अपना मुँह छिपाने वाले आदमी कभी उन बुराईयों को दूर न कर सकेंगे और समाज में जहाँ सुव्यवस्था की आवश्यकता है और अनीति के निराकरण की आवश्यकता है, वो पूरी न हो सकेगी। सामाजिक क्रांति के लिये हमको ऐसा शौर्य और साहस जन-मानस में जगाने की आवश्यकता है। भविष्य को उज्वल बनाने के लिए, मनुष्य जाति सामूहिक आत्महत्या के लिए बढ़ती सी मालूम पड़ती है, उनको रोकने के लिए हमको धर्मतंत्र को पुनर्जीवंत करना चाहिए। बड़ा काम बड़े साधनों से ही होता है और बड़े साधन केवल बड़े व्यक्तित्व ही जुटा सकने में सम्भव होते हैं। यही हमारा लक्ष्य है जिसके अनुरूप हम चाहते हैं। हर व्यक्ति के अन्दर महानता जागृत हो। हर व्यक्ति अपनी व्यैक्तिक सुख-सुविधाओं के अपेक्षा सामाजिक जीवन के लिए कुछ अधिक त्याग-बलिदान करने की हिम्मत उठायें। पुनर्गठन से हमारा यही मतलब है कि हम नया व्यक्ति बनायें, नया समाज बनायें, नया युग लायें। इसके लिए आवश्यकता है कि हम सब व्यक्ति निर्माण करने के कार्य पे जुट जायें और व्यक्ति को श्रेष्ठ समुन्नत बनाने के लिए भरसक प्रयत्न करें।

। समाप्त ।

## एक विशेष समय

हम में से प्रत्येक परिजन को कुछ मान्यताएँ अपने मन में गहराई तक उतार लेनी चाहिए इसलिए कि जिस समय में हम और आप जीवित रह रहे हैं, एक ऐसा समय है इसमें युग बदल रहा है और युग परिवर्तन की वेला है। हम में से प्रत्येक साधक को यह मानकर चलना चाहिए कि हमारा व्यक्तित्व विशेष है। हमको भगवान ने किसी विशेष काम के लिए भेजा है। कीड़े-मकोड़े और दूसरों सामान्य तरह के प्राणी पेट भरने के लिए और औलाद पैदा करने के लिये पैदा होते हैं। मनुष्यों में से भी बहुत सारे ऐसे ही नरपामर और नरकीटक हैं, उनके जीवन का कोई लेखा-झोखा नहीं पेट भरने के अलावा और औलाद पैदा करने के अलावा दूसरा कोई काम वह न कर सकेगा लेकिन कुछ विशेष व्यक्तियों के ऊपर भगवान विश्वास करते हैं और ये मानकर भेजते हैं के ये हमारे भी कुछ काम आ सकते हैं, अपने ही गौरव धंधे में ही नहीं फँसे रहेंगे।

युगनिर्माण परिवार के हर व्यक्ति को अपने बारे में ऐसी मान्यता बनानी चाहिए के हमको भगवान ने कोई विशेष काम के लिए भेजा है, ये कोई विशेष समय है और हममें से हर आदमी को यह अनुभव करना चाहिए कि युग की आवश्यकताओं को पूरा करने का उत्तरदायित्व हमारे कंधे पर है अगर ये विश्वास कर सके तो आपकी प्रगति का द्वार खुल सकता है और आप महामानवों के रास्ते पर जो के इस अपने परिवार के निर्माण का उद्देश्य आप सफलतापूर्वक चल सकते हैं। आपको विशिष्ट व्यक्तित्व सामान्य मनुष्यों जैसा नहीं। ये विशेष समय सामान्य जैसे शांति के समय होते हैं, वैसा नहीं। ये आपत्तिकाल जैसा समय है और आपत्तिकाल में आपत्तकालिन उत्तरदायित्व होते हैं। हमारे ऊपर जिम्मेदारियाँ सामान्य जिम्मेदारियाँ नहीं हैं। पेट भरने मात्र की जिम्मेदारियाँ नहीं हैं। इस युग की भी जिम्मेदारियाँ हैं, ये मानकर हमको चलना चाहिए और ये मानकर के चलना चाहिए के रीछ-वानर जिस तरह से विशेष भूमिका निभाने के लिये आये थे और ग्वालबाल श्रीकृष्ण भगवान के साथ में विशेष उत्तरदायित्व निभाने के लिये आये थे। आप इस तरह का अनुभव, विश्वास कर सके आप लोग उसी तरीके से जुड़े हुए हैं और विशेष उत्तरदायित्व महाकाल का सौंपा हुआ है, पूरा करने के लिए हम लोग आये हुए हैं। अगर ये बात मान सके तो फिर आपके सामने नये प्रश्न उत्पन्न होंगे और नई समस्याएँ उत्पन्न होंगी और नये आधार और नये कारण उत्पन्न होंगे।

पहला कदम आपको जो बढ़ाना पड़ेगा वो यह बढ़ाना पड़ेगा कि जिस तरीके से

सामान्य मनुष्य जीते हैं, उसी तरीके से जीने से इन्कार कर दें और यह कहे-हम तो विशेष व्यक्ति और महामानवों की तरीके से जीयेंगे, पेट तो ऐसे ही भरना है और ऐसे ही भरना है। केवल मात्र पेट ही भरना रहा तो गन्दे तरीके से हम क्यों भरें। शेष तरीके से हम क्यों न भरें। हम जो बाकी पेट भरने के अलावा जो कार्य कर सकते हैं, वह क्यों न करें। यह प्रश्न हमारे सामने ज्वलंत रूप से आता हुआ और हमको यह आवश्यकता मालूम पड़ेगी कि हम अपनी मनस्थिति में हेरफेर कर डालें, अपनी मनस्थिति को बदल डालें। मनस्थिति को बदल डालें और हम लौकिक आकर्षणों की अपेक्षा ये देखें इन्हीं में भटकते रहने की अपेक्षा भगवान का पल्ला पकड़ लेना ज्यादा लाभदायक है। भगवान का सहयोगी बन जाना ज्यादा लाभदायक है। भगवान को अपने जीवन में रमा देना ज्यादा लाभदायक है। संसार का इतिहास बताता है कि भगवान का पल्ला पकड़ने वाले और भगवान के सहयोगी बनने वाले कभी घाटे में नहीं रहेंगे। ये विश्वास करें तो एक बहुत बड़ी बात है। जानना चाहिये हमने एक बहुत बड़ा प्रकाश पा लिया अगर हम यह अनुभव कर सके तब कि मनस्थिति बदलनी है और संसारिकता का पल्ला पकड़े रहने के अपेक्षा भगवान की शरण में जाना है, ये हमारा दूसरा कदम होगा ऊँचा उठने के लिए। तीसरा वाला कदम आत्मिक उत्थान के लिये हमारा ये होना चाहिये कि हमारी महत्वकांक्षाएँ, हमारी कामनाएँ, हमारी इच्छाएँ बड़प्पन के केन्द्र से हटे और महानता के साथ जुड़ जायें। हमारी महत्वकांक्षाएँ ये नहीं होनी चाहिए के हम वासनाओं को पूरा करते रहेंगे जिन्दगी भर और हम तृष्णा के लिये अपने समय, बुद्धि को खर्च करते रहेंगे और हम अपनी अहंता को, ठाठ-बाट को, रोब को और बड़प्पन को लोगों के ऊपर रोबागालिब करने के लिए हम तरह-तरह के तानेबाने बुनते रहेंगे। अगर हमारा मन ये बात को मान जायें और हमारा अंतःकरण स्वीकार कर लें, ये बचकानी बातें हैं, छछोरी बातें हैं, छोटी बातें हैं, छछोरापन, बचकानापन और ये छोटापन क्षुद्रता को अगर हम त्याग कर सके तो एक बात हमारे सामने खड़ी होगी के अब हमको महानता ग्रहण करनी है।

महापुरुषों ने जिस तरीके से आचरण किये थे। महापुरुषों का चिंतन करने का जो तरीका था वही तरीका हमारा होना चाहिये और हमारी गतिविधियाँ उसी तरीके से होनी चाहिये जैसे के श्रेष्ठ मनुष्यों की रही हैं और रहेगी ये विश्वास करने बाद में हमको अपनी क्रियापद्धति में, दृष्टिकोण में ये मान्यताएँ लें आने के पश्चात् इच्छाओं और आकांक्षाओं का केन्द्र बदल देने के बाद हमको व्यवहारिक जीवन में भी थोड़े से कदम उठाने चाहिये। साधकों के लिये यहीं मार्ग है।

। समाप्त ।



## युग परिवर्तन

देवियों, भाईयो !

थोड़ी सी बातें ऐसी जो आपको गांठ बाँध करके रखनी चाहिए और कभी भूलना नहीं चाहिये। इसको आप गांठ बाँध करके रखना, कभी भूलना मत। एक बात मुझे आपसे ये कहनी थी आप एक विशेष उद्देश्यों को लेकर के, विशेष प्रयोजन के लिये, इस विशेष समय पर पैदा हुए हैं। ये युग के परिवर्तन की वेला है। आपको दिखाई तो नहीं पड़ता पर मैं आपको कह सकता हूँ और मुझे कहना चाहिये। आप जिस समय में पैदा हुए हैं, ये साधारण समय नहीं है, असाधारण समय है। इस समय में युग तेजी के साथ में बदल रहा है। बदल रहा है, आपने देखा नहीं, किस तरीके से परिवर्तन विश्व की समस्याओं में होते हुए जा रहे हैं। विज्ञान की प्रगति को आप देख नहीं रहे, क्या ? ऐसी ऐसी चीजे बनती हुई चली जा रही हैं, एक किरण-रे की तरीके से एक्स-रे की किरण फेंकती जाती है। किरण फेंकती जाय, न गैस फेंकने की जरूरत है, न कुछ फेंकने की जरूरत है, सारे का सारा इलाका जो मनुष्य कर रहा है वहाँ बैठे के बैठे रह जायेंगे, उठे के उठे रह जायेंगे, चलने-फिरने के लिये कोई मौका नहीं आयेगा। ऐसे-ऐसे वैज्ञानिक हथियार तैयार हो रहे हैं, जो दुनिया का सफाया करना हो तो बहुत जल्दी सफाया हो सकता है। विनाश, विनाश की दिशा में विज्ञान के बढ़ते हुए चरण जिस तेजी से बढ़ रहे हैं अगर चाहे तो एक खराब दिमाग का मनुष्य सारे दुनिया को इस सुन्दर वाले भुमण्डल को, इसको बनाने में लाखों वर्ष तक मनुष्य को श्रम करना पड़े। इसका सफाया किया जा सकता है। आज ऐसा वक्त है। इन्सान जितना घटिया होता चला जाता है। घटिया आदमी पहले कभी नहीं हुआ था।

दुनिया के पर्दे में, इतिहास ये बताता है कि मनुष्य इतना घटिया, इतना घटिया, आदमी कभी नहीं हुआ। आदमी समझदारी के हिसाब से बढ़ रहा है, विद्या उसके पास ज्यादा आ रहा है, समझदारी उसके पास ज्यादा आ रही है, पैसा उसके पास ज्यादा आ रहा है, अच्छे मकान ज्यादा आ रहे हैं, सब चीज ज्यादा आ रही है पर ईमान के हिसाब से और दृष्टिकोण के हिसाब से आदमी इतना कमजोर, इतना घटिया, इतना स्वार्थी, इतना चालाक, इतना बेईमान, इतना कृपण होता हुआ चला जा रहा है कि मुझे शक है, इतना ठग होता हुआ चला जाता है, आदमी। ठग, इस जमाने का आदमी मुझे ऐसा मालूम पड़ता है कि यही ठगी, यही कृपणता और यही स्वार्थपरता जो आज हमारे और आपके ऊपर हावी हो गई है। इसी हिसाब से, इसी क्रम से चलते ही एक आदमी, दूसरे आदमी को जिंदा निगल जायेगा, आदमी को अपनी छाया पर विश्वास नहीं रहेगा कि ये मेरी छाया है कि नहीं

और ये मेरी छाया मेरा सहायता करेगी के नहीं। आज ऐसी ही विचित्र स्थिति है। ऐसी ही विचित्र स्थिति है, बैठे! हम कुछ कह नहीं सकते। जैसी दुनिया की विचित्र स्थिति है, भयानकता। आज हमारे सामने खड़ी है युग का एक पक्ष विनाश के लिए मुँह फाड़कर खड़ा है।

अगर इसी क्रम से, इसी राह पर जिस पर आज हम चल रहे हैं, अगर वैज्ञानिक उन्नति मनुष्यों के भीतर, स्वार्थपरता की वृद्धि मनुष्यों के सन्तानों पर नियंत्रण का अभाव यही क्रम चला तो दुनिया नष्ट हो जायेगी। आप ध्यान रखना सो वर्ष बाद हम तो जिंदा नहीं रहेंगे, आप में से कोई जिंदा रह जायें तो देखना दुनिया का क्या हाल होता है। अगर ये स्थिति बनी रही तो। एक और स्थिति है, जिसका ख्वाब देखते हैं। सपने हम देखते हैं। सपने हम देखते हैं। हमारे स्वप्नों की दुनिया बड़े खुबसूरत दुनिया है, ऐसी दुनिया है, जिसमें प्यार भरा हुआ है, महोब्बत भरी हुई है, विश्वास भरे हुए है, एक-दूसरे के सहकार भरे हुए है, एक-दूसरे की सेवा भरी हुई है, इतनी मीठी, इतनी मधुर दुनिया है, हमारे दिमाग में घुमती है, अगर हमारे सपने कदाचित साकार हो गये तो ये भरा हुआ विज्ञान, ये भरा हुआ धन, ये भरी हुई विद्या, ये भरी हुई सुविधाएँ, आदमी के लिए मैं सोचता हूँ स्वर्ग के वातावरण को उतार करके जमीन पे ले आयेगी। हजारों लाखों वर्षों पूर्व न सड़के थी, न बिजली थी, न रोशनी थी, न टेलिफोन था, न डाक-खाना था, न कुछ भी नहीं था। ऐसे अभाव के जमाने में स्वर्गीय जिन्दगी जीया करते थे। आज बेहतरीन परिस्थितियों में दुनिया में इतनी शांति, इतनी सरसता, इतना सौंदर्य, इतना सुख पैदा कर सकते हैं कि हम नहीं कह सकते जिस चौराहे पर हम खड़े हुए हैं एक विनाश का चौराहा एक उन्नति का चौराहा। उन्नति में क्या होने वाला है इसके लिये आपको भूमिका निभानी पड़ेगी। काष्ठींग वोट आपका है। दो वोट बराबर होते हैं। एक वोट प्रेसीडेन्ट का होता है। प्रेसीडेन्ट दोनों वोट बराबर वालों में से जिसको चाहे उसके पक्ष में अपना डाल सकता है, उसी को जीता सकता है। आप लोग, आप लोग बेलेंसिंग पॉवरमेण्ट। आप चाहे तो वोट अपना वोट उसकी ओर डाल सकते हैं, जो पक्ष विनाश की ओर जा रहा है। आप चाहे तो अपना पक्ष उसके पक्ष में डाल सकते हैं, जो सुख और शांति लाने के लिए जा रहा है।

मैं सोचता हूँ, आपको ऐसा ही करना चाहिये सुखशांति के लिए अपना वोट डालना चाहिये और आपको अपनी वर्तमान जिन्दगी, वर्तमान जिन्दगी जानवरों की तरीके से नहीं जीनी चाहिये। आपको अपनी वर्तमान जिन्दगी मनुष्यों की तरीके से, विचारशीलों की तरीके से, समझदार की तरीके से, खर्च करना चाहिये।

ये विशेष समय है, ऐसा समय फिर आने वाला नहीं है।

। समाप्त ।

24

## विदाई

आपको यहाँ से जाने के बाद में कई काम करने हैं, बड़े मजेदार करने हैं, बहुत अच्छे काम करने हैं। लेकिन ये चलेगें नहीं, बस आपका मन बराबर ढीला होता चला जायेगा। मन को काट करने के लिए आप एक विचारों की सेना और विचारों की श्रृंखला बनाकर के तैयार रख लीजिए। विचारों से विचारों को काटते हैं, जहर को जहर से मारते हैं, काँटे को काँटे से निकालते हैं। कुविचार जो आपके मन को हर बार टंग करते रहते हैं, उसके सामने ऐसी सेना खड़ी कर लीजिए जो आपके बुरे विचारों के सामने लड़ सकने में समर्थ हो। अच्छे विचारों की भी एक सेना है। बुरे विचार आते हैं, लोभ के विचार आते हैं, लालच और बेईमानी के विचार आते हैं, आप ईमानदारों के समर्थन के लिए उनके इतिहास और वर्ण और स्वास्थ्य और महापुरुषों के वचन उन सबको मिलाकर के लिखिए। हम ईमानदारी की कमाई खायेगें, बेईमानी की कमाई हम नहीं खायेगें। काम-वासना के विचार आते हैं, व्याभिचार के विचार आते हैं। आप ऐसा किया कीजिए उसके मुकाबले की एक और सेना खड़ी कर लिया कीजिए। अच्छे विचारों वाली सेना। जिसमें आपको यह विचार करना पड़े, हनुमान कितने सामर्थ्यवान हो गये, ब्रह्मचर्य की बजह से। भीष्म पितामह कितने समर्थ हो गये, ब्रह्मचर्य के कारण। आप शंकराचार्य से लेकर के और अनेक व्यक्तियों, संतों की बात याद कर सकते हैं महापुरुषों की जिन्होंने अपने कुविचारों से लौहा लिया है।

कुविचारों से लोहा नहीं लिया होता तो बिचारे संकल्पों की क्या विसात थी, चलते ही नहीं, टूट जाते। कुविचार हावी हो जाते और जो विचार किया गया था वो कोने पे रखा रह जाता और ऐसे समय में विचारों की एक सेना खड़ी कर लिये तो आपके लिए स्वर्ग होगा। जब बेईमानी की विचार आयें, काम-वासना के विचार आयें, ईर्ष्या के विचार आयें, अधपतन के विचार आयें तो आप उनकी रोकथाम के लिये आप अपनी सेना को तैयार कर दे और उनके सामने सिर लड़ा दें। लड़े बिना कैसे चलेगा, बताईये। रावण से लड़े बिना कई काम चला। दुर्योधन से लड़े बिना काम चला। कंस को लड़े बिना काम चला। लड़ाई महोब्बत है अथवा कैसी है, हिंसा की है, अहिंसा की है ये मैं इस वक्त बात नहीं कह रहा हूँ। मैं तो यह कह रहा हूँ कि आपको अपनी बुराईयाँ कमजोरीयों से मुकाबला करने के लिए और समाज में फैले अनाचार से लौहा लेने से भी हर हालत में आपको ऐसे ऊँचे विचारों वाली सेना बनानी चाहिए के आपको भी हिम्मत देने में समर्थ हो सके और आपके समीपवर्ती इस वातावरण में भी नया माहोल पैदा होने में समर्थ हो सके। ये संकल्प भरे विचार होते हैं।

हजारी किसान ने ये फैसला किया था कि “मुझे हजार आम के बगीचे लगाने हैं” बस घर से निकल पड़ा तो उसकी बात लोगों ने मान ली। क्यों मान ली। वो संकल्पवान था। संकल्पवान नहीं होता तो ऐसी ही व्याख्यान करता फिरता साहब! “पेड़ लगाईये, हरियाली

वाईये, पेड़ लगाईये, हरियाली वाईये” तब कोई लगाता क्या। संसार इतना प्रचार किया करती है, कोई सुनता है, क्या। सुनने के लिये ये बहोत जरूरी है कि जो आदमी उस बात को कहने के लिये आया है, वो संकल्पवान हो। संकल्पवान का अर्थ ऊँचे सिद्धान्तों को अपनाने का निश्चय। अवश्य निश्चय में कोई रास्ते में व्यवधान न आवें इसी लिए थोड़े-थोड़े समय के लिए ऐसे अनुशासन जिससे के स्मरण बना रहे, मनोबल बढ़ता रहे, मनोबल गिरने न पायें। संकल्प को याद करते आदमी अपनी गौरव गरिमा को बनायें रहता है। इसी लिए आपको व्रतशील होना जरूरी है। व्रतशील आता है-पीले। पीले कपड़े पहनने के लिये आपको कहा गया है, ये व्रतशील होने की निशानी है। दूसरे लोग पीले कपड़े नहीं पहनते आपको पहनना चाहिए। इसका मतलब ये है, दुनिया का कोई दबाव आपके ऊपर नहीं है और दुनिया की नकल करने में और अनुकरण करने में आपकी कोई मजा नहीं है। ये क्या है, ये व्रतशील की निशानी है। भोजन जैसा भी हो, खराब है तो खराब से काम करें। खराब से ही काम चलायें लेकिन नहीं साहब! जायका अच्छा नहीं लगता वहाँ कचौड़ी खायेगें। मत कीजिए ऐसा। तरह-तरह के व्यंजन और तरह-तरह के स्वादिष्ट भोजन पे मत चढ़ा कीजिए। फिर क्या होगा। खान-पान से लाभ होगा तो होगा ही खान-पान के लाभों को मैं इतना महत्व देता नहीं जितना की इस बात को महत्व देता हूँ कि आपने अपने मन को कुचल डालने का, मन को लोहा लेने को, मन को बदल डालने के लिए आपने वो हथियार उठा लिया जिससे आपका दुश्मन आपका दोस्त बन सकता है। आपका दुश्मन नम्बर एक-आपका मन और आपका दोस्त नम्बर एक-आपका मन। दुश्मनों का दोस्त के रूप में जिस दबाव की जरूरत है, जिस आग की भट्टी में नया ओजार ढालने की जरूरत है, उस भट्टी का नाम है-संकल्प। आत्मानुशासन। आपने आपका आत्मानुशासन स्थापित करने के लिए आपको व्रतशील होना चाहिए। संकल्पवान होना चाहिए और संकल्पों में व्यवधान उत्पन्न न हो इसलिए आपको कोई न कोई ऐसे नियम और व्रत समय-समय पर लेते रहना चाहिए। इसका अर्थ ये होता है कि अमुक काम न हो जायेगा तब तक हम अमुक काम न करेगें। संकल्पवान होना चाहिए।

संकल्पवान ही महापुरुष बने हैं, संकल्पवान ही उन्नतिशील बने हैं, संकल्पवान ही सफल हुए हैं और संकल्पवानों ही संसार की नाव को पार लगाया है। आपको संकल्पवान और व्रतशील होना चाहिए। नेकी आपकी नीति होनी चाहिए। उदारता आपका फर्ज होना चाहिए। आपने अगर ऐसा कर लिया हो तो आप दूसरा कदम ये उठाना के हम ये काम नहीं किया करेगें। समय-समय पर सोते सोच लिया कीजिए के गुरुवार के दिन, गुरुवार के दिन नमक न खाने की बात, ब्रह्मचर्य पे रहने की बात, दो घण्टे मौन रहने की बात आप भी ऐसे व्रतशील होकर के कुछ नियम पालन करते रहेगें और उनके साथ-साथ में किसी श्रेष्ठ कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों का ताना-बाना जोड़ के रखा करेगें तो आपके विचार सफल होंगें, आपका व्यक्तित्व पैना होगा और आपकी प्रतिभा तीव्र होगी और आप एक अच्छे व्यक्ति निष्णात होंगें अगर आप आत्मानुशासन और अपनी व्रतशीलता का महत्व समझे और उसे अपनाने की हिम्मत बढ़ाये।

समाप्त।